मूल्य रु. ५-००

सलंग अंक ८१ जनवरी-२०१४

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

श्री स्वामिनारायण मंदिर,
कालूपुर में
धनुर्मास धुन महोत्सव में
दर्शन देते हुए
श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में मोटेरा में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा आयोजित सत्संग शिबिर की झलक

१

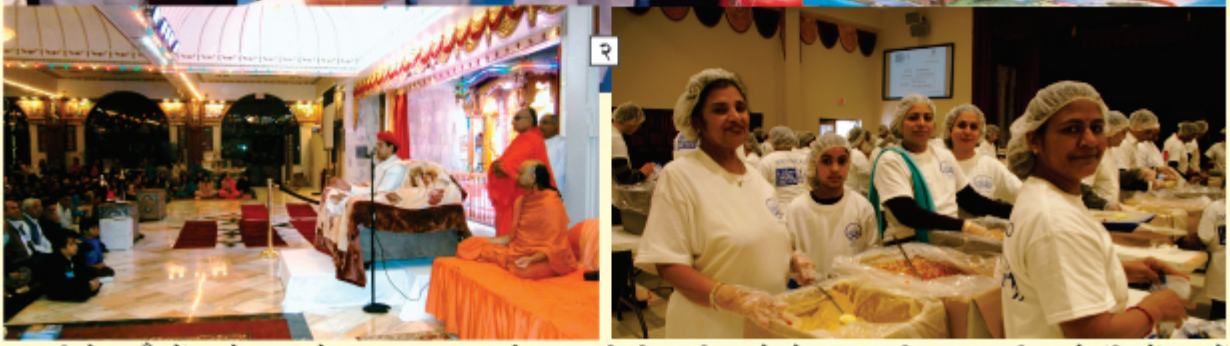

२

(१) दियोदर गाँव में शाकोत्सव करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते हुये यजमान परिवार ।(२) शिकागो मंदिर में सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा शिकागो में आये हुये प्राकृतिक आपदा के समय मंदिर द्वारा फूड पेकेट बनाते हुए हरिभक्त ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ७ ● अंक : ८१

जनवरी-२०१४

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	ब्रह्ममुनि बहुत पढे	०६
०४.	एक पहचान पू. बड़े महाराजश्री की (प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री)	०८
०५.	वचनामृत विषय पर विचार विमर्श	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का उद्‌भव स्थान	११
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०८.	सत्संग बालवाटिका	१५
०९.	भक्ति सुधा	१७
१०.	सत्संग समाचार	२२

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० ● विदेश १०,०००-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

॥ अस्मदीयम् ॥

धनुर्मास चल रहा है। यह थोड़े समय के बाद पूर्ण हो जायेगा। इस महीने में भजन का बैलेन्स बढ जाता है। पूरे मास शरीर को कंपादेने वाली ठन्ठी में जिन्होंने श्री स्वामिनारायण मंत्र का जप किया है, उनके तन-मन में शीतलता व्याप्त हो गयी होगी। भजन का ऐसा प्रताप है कि चाहे जैसा भी प्रारब्धहो उसे भगवान परिवर्तित कर देते हैं। छ अक्षर वाले षडाक्षरी का यह माहात्म्य है।

भगवाननुं ध्यान करते थके मनने विषे अनेक प्रकारना भूंडा घाटना तरंग उठवा मांडे। जेम समुद्रना मोटा मोटा तरंग उठे तेम भूंडा घाट (उठवा लागे) त्यारे ते घाट केम टाडवो ? हवा घाट थवा मांडे त्यारे ध्यानने पडतु मूकीने जीभे करीने उच्च स्वरे निर्लज्ज थईने ताली वजाडीने स्वामिनारायण-स्वामिनारायण भजन करवुं। अने हे दीन बन्धो ! हे दया सिन्धो ! एवी रीते भगवाननी प्रार्थना करवी (वच. लोया-६)

चाहे जितना बड़ा अपराधहो गया हो - श्री स्वामिनारायण महामंत्र शांत कर देता है। हम सभी बड़े भाग्यशाली हैं। ऐसे अलौकिक सत्संग में जन्म लेने से सर्वोपरि भगवान मिल सके हैं इसकी याद सदा रखनी चाहिये। काल, कर्म, माया भी उन्हीं के अधीन वर्तन करती है। ऐसे भगवान हमें मिले है। इसलिए भगवान स्वामिनारायण के नाम का चलते फिरते - उठते-बैठते सतत स्मरण करते रहना चाहिये। जिससे अपने मन में उठने वाले सभी संकल्प भी शांत हो जायें।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(दिसम्बर-२०१३)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर कपडवंज मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

२ प.भ. हरिकृष्णभाई भोलाभाई पटेल (विहारवाला) के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर जीरागढ (मूलीदेश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

९ हलवद गाँव में अखंड धून महामंत्र की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर जमीयतपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर बलोल (भाल) (मूली देश) ८ वाँ पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा (कपडवंज) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर दियोदर (बनासकांठा) शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर मनीयोर (इडर देश) पदार्पण।

१९-२० श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) पदार्पण।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर गोडपर (कच्छ) पदार्पण।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा कथाप्रसंग पर पदार्पण।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर इलोल पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण कथा प्रसंग पर पदार्पण।

२६-२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर दहीसरा (कच्छ) पदार्पण।

२९ लेउवा पटेल समाज में पदार्पण, नारणपुरा।
मोटेरा गाँव में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल सत्संग शिबिर प्रसंग पर पदार्पण।
गोठीब (पंचमहाल) गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर अमजा कथा प्रसंग पर पदार्पण।
सायंकाल भुज पदार्पण।

३१-१ जनवरी श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज, सुखपर तथा सरली गाँव में (कच्छ) पदार्पण।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(दिसम्बर-२०१३)

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा कथा प्रसंग पर पदार्पण।

३१ प.भ. अमृतलाल हरगोविंददास पटेल के (नारणघाट मंदिर कथा प्रसंग पर) यहाँ पोथीयात्रा प्रसंग पर पदार्पण, सोला।

ब्रह्ममुनि बहुत पढे

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

भगवान स्वामिनारायण के सखा सद्‌गुरु ब्रह्मानंद स्वामी महाराज की सेवा में बहुमुखी प्रतिभा वाले थे । अन्य संत अपनी योग्यता के अनुसार प्रभु की सेवा करते जब कि ब्रह्ममुनि तो जैसी आवश्यकता होती वैसी सेवा करते थे । मांडवी में श्रीहरि ने खयाखत्री को अपना निश्चय कराने के लिये अपनी गद्दी पर स्वामी को बैठाया इसी तरह सूरत की मुनिबा को गढडा लाकर निश्चय करवाये । चाहे जैसा भी अटपटा काम हो उसे अनुकूल करने में स्वामी बड़े प्रवीण थे । अमदावाद मंदिर के पुजारी गोपी भट्ट को श्रीजी महाराज ने पत्र दिया बाद में युक्तिपूर्वक समझाकर पत्र वापस लाकर दिये । जूनागढ में नवाब के शासन में मंदिर निर्माण करना, बडताल में मंदिर निर्माण तथा मूली में मंदिर निर्माण करना, इस तरह असंख्य कठिन कार्य को ब्रह्ममुनि ने बड़ी सरलता के साथ सेवा किये थे । जब श्रीहरि एकांतवास करते तब ब्रह्ममुनि सिद्धा रासन इत्यादि की व्यवस्था करते, जब महाराज, उदासीन होते तब उदासीनता दूर करने के लिये विनोद वाक्यो से आनंदित करते ।

एकबार संतो को गढडा आने के लिये निषेधकिया गया तो ब्रह्ममुनि कीर्तन लिखकर दर्शन का मार्ग उन्मुक्त करवादिये थे । ऐसे संत विद्याभ्यास, कीर्ति के लिये किये फिर भी श्रीहरि की सेवा में कीर्तन गाते रहे । स्वामी विद्याभ्यास में तथा कला में पारंगत हुए यह स्मरणीय है । अपने ास एक विद्या भी आजाय तो धरती पर पैर नही रहता, विद्याभ्यास उदर मूर्ति के लिये करते हैं । लेकिन एकमात्र स्वामीजी ऐसे थे जो अपनी संपूर्ण विद्या महाराज के चरण में अर्पण कर दिये । प्रभु में ऐसी प्रीति थी कि प्रभु के स्वधाम गमन के समय ब्रह्ममुनि को महाराज जबरदस्ती जूनागढ भेंजे थे क्यों कि उन्हे यह खबर थी कि ब्रह्ममुनि हमें शरीर छोडने नही देंगे ।

१८ वर्ष की उम्र में खाण गांव से भुज आये । सिरोही के महाराव तथा भुज के महाराव का सम्बन्धथा । भुज के महाराव लखपतरायजी की पाठशाला थी, जिस में संगीत का अभ्यास कराने वाले चारणकुल भूषण अभयदानजी के पास साहित्य तथा संगीत का अभ्यास प्रारंभ किये । सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा चार गुना स्मरण शक्ति अधिक थी । स्वल्प समय में उन्होंने जिन-जिन शास्त्रों का अभ्यास किया उनका उल्लेख कर रहे है - (१) अनेकार्थी नाम माला । (२) भामंजरी । (३) रुपदीप पिंगल (४) रसराज (५) सुंदर श्रृंगार (६) कपिप्रिया (७) रटिन्क प्रिया (८) चमत्कार चंद्रिका (९) भाषा भूषण (१०) जगत विनोद (११) सभा प्रकाश (१२) शब्द कोष (१३) लखपत पिंगल (१४) हमीर पिंगल (१५) नाग पिंगल (१६) छंद पिंगल (१७) रुपदीप पिंगल (१८) अमृत पिंगल (१९) खट विद्या (२०) अष्टविद्या (२१) चित्रप्रबन्ध(२२) डांगर साहित्य में त्रटक बंध(२३) वकटबंध(२४) शया खरुं (२५) चिंतु लोल झामल (२६) शांगार (२७) अमृत ध्वनि (२८) रेण की (२९) चर्चरी (३०) वर्चनिका (३१) गजगत (३२) अवतार चरित्र (३३) रामायण (३४) पांडव यशेन्द्र चन्द्रिका (३५) राजनीति (३६) पृथ्वीराज रासो (३७) प्रवीण सागर में रस, अलंकार नायक भेद, चित्र काव्य, अश्व विद्या, ज्योतिष विद्या संगीत विद्या, वैद्यविद्या, योग विद्या, ब्रह्म विद्या, याद शक्ति होने से अष्टविधान, षोडश विधान चौसठ विधान, शत विधान सहस्त्र विधान इत्यादि रचनाये स्वयं किये । भारत की भूमि पर हजारों विद्या में पारंगत होकर प्रमाण पत्र पानेवाले एक मात्र महाकवि लाडुदानजी थे । मातृषाभा मारवाड़ी का तथा व्रज भाषा का भुज में १० वर्ष तक

रहकर अध्ययन किये थे । गुरु का तथा राजा का आशीर्वाद प्राप्त करके भुज से जब विदा हो रहे थे तब राजा उन्हें १२ गाँव को भेंट देना चाहते थे जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया । वहाँ से वे धमकडा गाँव में आये । धमकडा में पं. कनककुशलजी भट्टाचार्य के शिष्य विजय कुशल भट्टाचार्य के साथ मिलन होने के बाद भट्टाचार्यजी लाडुदान के ज्ञान से प्रभावित होकर अपने साथ धमकडा दरवार के पास ले गये । वहाँ पर रहकर भट्टाचार्यजी से २४ कलाओं का अभ्यास किया । (१) गीत - सुरताल (२) वाद्य - बजाने की कला । (३) नृत्य - नाचने की कला (४) नाटक - अभिनय की कला (५) उथक - पानी भरने का वाद्य (६) पानी में तैरने की कला (७) हसी लाधव - तलवार - भाला चलाने की कला (८) पाक - रसोई बनाने की कला (९) प्रटलिका दूसरे का बोलना बंद कराने की कला (१०) प्रतिमाल - त्वरित उत्तर की कला (११) वांचन - प्राचीन लीपि वांचने की कला (१२) नाट्याख्यायिका - नाटक खेलते समय कमी निकालने की कला (१३) काव्य समस्यापूर्ति - (१४) कर्तवाड - तर्क - वितर्क करना (१५) रथकला नक्काशी का काम बढई की कला (१६) शिला - राज महल - देवालय - गुप्त धन संचय स्थान बनाने की कला (१७) रुप रत्न - रत्न पहचानने की कला (१८) अक्षरमुष्टका कथन - दूर में लिखने वाले के हाथ की हलन चलन से लेख जानने की कला । (१९) शुकन कला - शरीर का अंग फड़कना तथा स्वप्न देखने, पशु पक्षिओं की आवाज के लाभ अलाभ का ज्ञान (२०) संवाच्य काव्य - छंद दोहा काव्य पूर्ति - पाद पूर्ति (२१) अभिधान कोष - सांकेतिक शब्द का अर्थकरण (२२) छंदोज्ञान - छन्द की संख्या अक्षरभेद - राग इत्यादि (२३) क्रिया विकल्प भोजन को लम्बे समय तक रखना । (२४) आकर्षि क्रिया कशरत, कुस्ती, पट्टाबाजी, युद्ध पट्टा इत्यादि ६४ कलाओं को प्रकाशित किये । महाराव की भाभी करणीबा समाधिनिष्ठ थी । लाडुदान जी ब्रह्मानंद होकर सत्संग की सेवा करेंगे ऐसा उन्होंने भविष्यवाणी की थी ।

शुक्रनीति, विदूरनीति, चाणक्यनीति, अंगत नीति राजनीति इत्यादि का अध्ययन करके प्रथमवार जब वे गढपुर में आये उसी समय उनकी भेंट महाराज से हुई । अपनी सम्पूर्ण विद्या-ज्ञान-विज्ञान महाराज के चरण में अर्पित करके दास हो गये ।

एकबार जूनागढ के नवाब ने ब्रह्मानंद स्वामी को कहा कि एक दोहा बनाकर दीजिये तो जूनागढ का मंदिर राज्य कोष से बनवा देंगे । लेकिन उनकी इस भावना को वे स्वीकार नहीं किये । वे कहे कि मैं अपनी संपूर्ण विद्या तथा कला भगवान श्री स्वामिनारायण के चरण में अर्पण कर दिया हूँ । इतनी विद्या तथा कला में पारंगत लाडुदान सिवाय कौन ऐसा होगा कि यावत जीवन प्रभु के चरणों में आत्मसमर्पण करके भक्तिमय त्याग मय जीवन जी सके ।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५
● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

एक पहचान पू. बड़े महाराजश्री की (प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री)

- नटुभाई पटेल (राजपुरावाला केनेडा)

पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान इस पृथ्वी से स्वधाम पधारने से पूर्व स.गु. गोपालानंद स्वामीके साथ तथा अन्यवरिष्ठ सन्तो के साथ परामर्श करके अपने भाइयों के पुत्रों को दत्तक लेकर इस स्वामिनारायण की गद्दी पर प्रतिष्ठित करके दो विभाग करके श्री नरनारायणदेव गादी - अमदावाद, श्री लक्ष्मीनारायणदेव गादी - वडताल की रचना करके करोडो आश्रितों के कल्याण हेतु दत्तक पुत्रों को आचार्य महाराजश्री के रुप में प्रदान किया । इस तरह श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री श्री नरनारायणदेव कालुपुर के प्रथम आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए । श्री रघुवीरप्रसादजी महाराजश्री वडताल गादी के प्रथम आचार्य बने । परंपरा युक्त श्री अयोध्याप्रसादजी के छठे वंशज प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेनद्रप्रसादजी के जीवन की झलक यहाँ प्रस्तुत करते है।

अमेरिकन लेखक विलियम वर्षो पूर्व भारत आये थे । आध्यात्मिक भारत - आध्यात्मिक ज्ञान तथा इससे संयुक्त धर्म सम्बन्धित जितने भी पीठाधिपति थे उनके नियम के विषय में कुछ लिखना चाहते थे । भारत के आध्यात्मिक गुरुओं के विषय में वे जो सुने थे, उसे अक्षरशः उतारना चाहते थे । यहाँ आकर भारत के सभी धार्मिक स्थलों पर विचरण किये । प्रायः सभी धर्मगुरुओं को मिले भी । लेकिन निराश होकर यहाँ से वापस जाने वाले थे । संतोषजनक कोई उत्तर नहीं मिलता था । संयोगवश वे अमदावाद श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर आये । यहाँ इनकी गवेषणा पूर्ण होगयी ।

सौम्य, सरल, सादाजीवन, असाधारण व्यक्तित्व आकर्षक स्वरुप आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण, साधना परायण ऐसे तत्कालीन आचार्य प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री से मिले । संपर्क में आने के बाद उनसे प्रभावित होकर विलियमने अपने कैमरे से अनेको फोटो लिये । प.पू. महाराजश्री के विषय में नोट तैयार किये । इसके बाद यहाँ से अमेरिका वापस गये । वहाँ जाकर अपनी सार गर्भित शैली में इस तरह लिखे -

धर्माचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी से मैं प्रभावित होकर अन्तर की प्रेरणा से लिख रहा हूँ - जिसका इन्द्र की तरह लावण्य स्वरुप, वात करने की सीधी सादी रीत, बडप्पन से युक्त होते हुए भी सादगी भरा जीवन, आध्यात्मिक ज्ञान की पराकाष्ठा देखकर मैं उन्हें नमन करता हूँ । हमारी दृष्टि से गुरु कैसा होना चाहिए, इन्हें देखने के बाद मेरे प्रश्न की पूर्णता यहाँ हो जाती है । में अपने जीवन को धन्य मानता हूँ । समय बीतते डेट्रोइट (मिशीगन यु.एस.ए.) मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा के समय वहाँ आकर महाराजश्री के चरणों में मैंने बन्दन किया ।

पूज्य बड़े महाराजश्री के समय में देश-विदेश में सैंकडो मंदिरो का निर्मण हुआ । जिसके माध्यम से युवापीढी को ही नहीं अपितु सभी वर्ग के लोगो को व्यसन, से दूर रहने की प्रेरणा मिली और उत्तरोत्तर शक्ति मिली इसके साथ ही विद्या संकुल की स्थापना भी हुई ।

प्राकृतिक आपदाओं में भी सहयोग करके महापुरुष के नाम को चरितार्थ किया । परदेश की धरती अफ्रिका, इंग्लेन्ड जैसे देशों में विचरण करके स्वामिनारायण संप्रदाय की पहचान सभी को कराये । इसके साथ वहाँ रहनेवाले लोगो को (भारतीय लोगो को सात्विक जीवन जीने की राह बताये । सन् १९७८ में अमेरिका जैसे युनाइटेड स्टेशन में जाकर एक जबरदस्त अभियान चलाये । रात्रि-दिन की परवाह विना किये केवल धर्म उपदेश तथा मानव उत्कर्ष की वात किये । आज उन्हीं के प्रताप से अगणित मंदिर वहाँ पर दर्शन के स्थान बने हुए है । इस तरह आई.एस.एस.ओ. नाम की संस्था स्थापित करके नई पीढी को नाना विधदोषो से दूर किये ।

सत्तर वर्ष की उम्र हो गयी फिर भी युवानों को शरमा देने वाली दैनिक चर्या के बल से पूर्ण स्वस्थ होकर समाज को सच्ची दिशा दे रहे हैं । जहाँ-जहाँ प.पू. महाराजश्री के प्रवचन हुए हैं उनमे से कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत करते है -

जब आचार्य पद पर थे उस समय लंडन गये वहाँ पर हरिभक्तने राडो घडी भेंट में दिया जो उनके पर्सनल उपयोग के लिये थी । नया-नया मंदिर बना था पैसे की तंगी थी, इस वात को महाराजश्री जानते थे । इसलिये वे दूरदर्शिता को ध्यान में रखकर सभा में आकर कहे कि मेरी इस घड़ी को जो प्रसादी के रुप में लेना चाहे पहले वह ले सकता है लेकिन जो सबसे अधिक रकम देगा उसे ही यह घड़ी मिलेगी । ऐसा सुनते ही वहाँ पर बोली बोली गयी तो उस ६० पाउन्ड कीमत वाली घड़ी का ६००० पाउन्ड मिला । जिसका उपयोग मंदिर के विकास हेतु दे दिये । कैसी पवित्र भावना, कितना उत्तम विचार ।

अमेरिका के मीशीगन स्टेशन में हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण करने गये - उस समय ठाकुरजी भी साथ में थे, साथ में संत हरिभक्त भी थे । वहाँ पर मुख्य रुम का बल्ब किसी कारण से उड गया था । वह बल्ब थोडा अधिक उचाई पर था । इस घर के सभी सदस्य नाटे-नाटे थे बल्ब कौन लगाये ? वहाँ कोई कुर्शी या टेबल भी नहीं था । इस दृश्य को महाराजश्री देख रहे थे । वे तुरंत बोले, लाइये मैं बल्ब लगा देता हूँ । हम लंबे है । महाराजश्री ने बल्ब लगाया तो चारो तरफ प्रकाश फैल गया । वे लोग कहने लगे कि महाराजश्री । हम लोगों ने आपको कष्ट दिया । महाराजश्रीने कहा कि अन्धकार में प्रकाश करने का काम मेरा है । हमारे दादाजी (भगवान श्री स्वामिनारायण) यहाँ काम करने के लिये हमे रखे है । विचार करने लायक यह वात है । हरिभक्तों के प्रति कितनी आत्मीयता है ।

कुछ वर्ष पूर्व स्वयं निर्णय लेकर संप्रदाय के आचार्य पद (स्थान) छोड़कर निवृत्ति लेने में भी अटके नहीं । एक बड़ा काम हाथ में लिये । सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण के समय में उनके द्वारा उपयोग में जो भी वस्तु जहाँ पर थी, अव्यवस्थित थी, रखने वालों के समझ से बाहर थी, उन सभी प्रसादी की वस्तुओं को एक स्थान पर रख रखाव के साथ सुरक्षित हो इसलिये म्युजियम बनाने का संकल्प किये । इस में एक और पारदर्शिता की - वह यह कि एक स्थान पर प्रसादी की वस्तुयें हों तो संप्रदाय के तथा अन्य भी इसका दर्शन करे और अपने जीवन को कृतार्थ करें . ऐसा विचार करके निवृत्ति के बाद अपने जीवन को म्युजियम के लिये न्यौछावर कर दिया । परिणाम स्वरुप हरिभक्तों के सहयोग से, संतो के परिश्रम से एक उत्तम आधुनिक रखरखाव से युक्त, न भूतो न भविष्यति ऐसा स्मारक करोडो रुपये के खर्च से तैयार किया गया । सभी प्रसादी की वस्तुएं अनेकों स्थानों से, लोगो के पास से एकत्रित करके सभी को दर्शन का सुख मिले ऐसा आयोजन किया । इतना ही नही अपने जीव में जो भी परंपरा से प्राप्त प्रसादी की वस्तु थी वह सब बिना संकोच के म्युजियम मे लाकर रख दिये । आज भी प्रतिदिन नियमित समय से उपस्थित होकर देख भाल करते रहते हैं। दर्शनार्थियों की

पेईज नं. १२

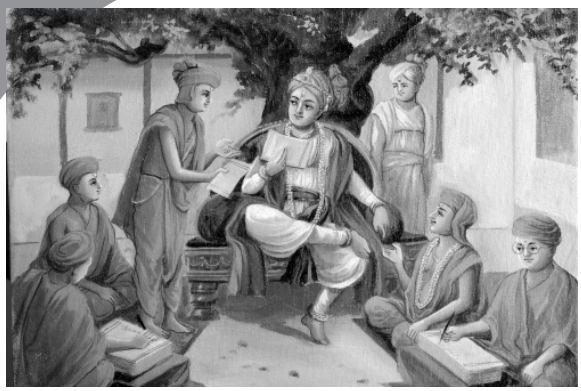

श्री स्वामिनारायण

॥ वचनामृत ॥

विषय पर विचार विमर्श

- महादेव धोरियाणी

साहित्य मानव जीवन की रचना करता है । शिष्ट तथा उच्च साहित्य मनुष्य को उच्च स्थान पर ले जाता है । जिस में सभी का हित समाया हो वह साहित्य है । जैसा साहित्य वांचेगे वैसा मन में भाव आयेगा । ''वचनामृत'' भगवान स्वामिनारायण के सम्प्रदाय का एक अद्‌भुत साहित्य है । यह ऐतिहासिक - धार्मिक ग्रंथ है । इस में प्रश्नोतरी द्वारा उपदेश दिया गया है । यह अपूर्व - अद्‌भुत अद्वितीय ग्रन्थ है । तत्वज्ञान से भरपूर यह ग्रंथ सभी के लिये उदाहरण रुप है । सभी से अनुकरणीय है । जिस में २७३ वचनामृत समाये हुए हैं । यह ग्रन्थ गीता, भागवत, उपनिषद् इत्यादि सत् शास्त्रों का सार है । आध्यात्मिकता के अनेक गूढ प्रश्नो का उत्तर इस ग्रन्थ में है । इस वचनामृत का आशय मुमुक्षु लोगो को आत्यन्तिक कल्याण के मार्ग पर ले जाना है । सहजानंद स्वामी ने आचार शुद्धि तथा संयम के ऊपर खूब बल दिया है ।

सहजानंद स्वामीने अपने संप्रदाय के प्रचार हेतु गुजरात सौराष्ट्र में विचरण करके प्रवचन तथा उपदेश के माध्यम से लोगों को धर्म से प्रवृत्त किया । वचनामृत ग्रंथ गद्य में है । यह स्वामिनारायण सप्रदाय में अत्यन्त महत्व का ग्रन्थ है । इसका स्वरुप प्रश्नोत्तर पद्धति का है । इस में ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, धर्म साधना, उपासना इत्यादि के विषय में विशाद चिन्तन किया गया है । इस ग्रंथ में कुसंग का त्याग, व्यसन, मुक्ति, सत्संग की महिमा, कुडा पंथी, वेदांत पंथी, शक्तिपंथी, नास्तिक इत्यादि से सम्बन्धित तर्क के साथ सप्रमाण सहजानंद स्वामीने निरुपण किया है । सत्संगी मात्र को भगवान की मूर्ति का ध्यान करके सदा भक्ति में डूबे रहना चाहिये । भक्ति में आवरण रुप रहने वालों से सदा सावधान रहना चाहिये । माया को जितने वाले को सहजानंद स्वामीने निष्काम भक्ति कहा है । उन्होंने मुक्ति के चार प्रकार बताया है । सच्चा भक्त मुक्ति को भी नहीं चाहता । ''उतरी जाये मोक्षनाय पण मोह'' । विषय त्याग तथा इन्द्रिय पर विजय से ही मन पर नियंत्रण करना संभव है । काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, इत्यादि सत्संगियों के शत्रु कहे है । इन अंत:शत्रुओं को जीतने के लिये सहजानंद स्वामीने वचनामृत में अनेकों उपाय बताये है । क्रोधी, कपटी, अभिमानी सत्संगी हो तो भी उसका त्याग कर देना चाहिए । वचनामृत संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती भाषा में उपलब्धहै ।

यह संप्रदाय सगुणों पासक है । अवतार बाद को मानने वाले हरिभक्त भगवान श्रीकृष्ण के अवतार को पूर्ण पुरुषोत्तम रुप में पूजते हैं । श्रीकृष्ण की उपासना को खूब फलदायी माना जाता है । सहजानंद स्वामी भगवान की भक्ति करने की बात की जाती है । भक्ति न करने वाले का त्याग कर देने की वात की गयी है । इस ग्रंथ में स्वामिनारायण संप्रदाय के सिद्धांतो का सरल माषा में निरुपण किया गया है । सहजानंद स्वामी के कार्तालाप की शैली विशद-सरल तथा आत्मीयता से परिपूर्ण है । श्रोता निकटता का अनुभव करते हैं । वचनामृत पढने से आज से २०० वर्ष पूर्व गुजराती भाषा का स्मरण हो जाता है । सौराष्ट्र के तलपदा गद्य का स्वरुप तद्‌रुप में दृष्ट होता है । गद्यकृति में वचनामृत मध्यकालीन गुजराती साहित्य की ऐतिहासिकता के महत्व को प्रगट करता है । सहजानंद स्वामी जैसे परमपूजनीय तथा वंदनीय विभूति के सदुपदेश गुजराती प्रजा को सुखकारी मार्ग दर्शन देगा इसमें किंचित संदेश का स्थान नहीं है । कारण यह कि भगवान के मुख से यह अमृतवाणी वाचको के लिये सदा के लिये आनंददायिनी होगी । उनके मुख से जो अमृतवाणी अवतरित हुई वही शास्त्र का रुप हो गया और श्रुतिरुप में प्रगट हो गयी । ऋषिमुनियों द्वारा उपदिष्ट शस्त्रही स्मृति ग्रंथ कहे गये ।

यह वचनामृत रुप शास्त्र गुजराती साहित्य में तथा अन्यसाहित्य में भी शिरमौर्य कहा जा सकता है । कारण यह कि यह ग्रंथ सम्पूर्ण साधना का फल है । यह ग्रंथ शंका, संशय से दूर करता है । इस ग्रंथ में सभी शास्त्रों को निचोड आ जाता है । श्री उमाशंकर जोषी के शब्दों में तो ''वचनामृत'' ग्रंथ गुजराती साहित्य का उत्तंग शिखर है । यह ग्रंथ - एक गद्य साधना का केन्द्र है ।

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का उद्‌भव स्थान

ले. - जयंतीभाई के. सोनी (मेमनगर-अमदावाद)

सत्संगीमात्र को यह विदित है कि विश्व में श्री स्वामिनारायण मंदिर संप्रदाय का कालुपुर अमदावाद में सर्व प्रथम श्रीहरि स्वयं निर्माण करवाये । मंदिर के मुख्य पीठ पर श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा संवत १८७८ फाल्गुन शुक्ल-३ सोमवार ता. २४-२-१८२२ को किये थे । श्री नरनारायणदेव भक्ति धर्म से अवतार धारण किये थे । इसलिये श्री नरनारायण को मैंने अपना स्वरुप जानकर बड़ी श्रद्धा के साथ श्रीनगर में प्रतिष्ठित किया है । इसलिये इन श्री नरनारायणदेव में तथा मुझ में कोई भेद नहीं है । किसी को ऐसा भेद मानना नहीं है । श्री नरनारायणदेव से हमारा तादात्म्य संबन्धहै, कभी हम वियुक्त नहीं रहते, इसीलिये जितने भी हमने मंदिर बनवाये उन सभी से अमदावाद मंदिर सर्वश्रेष्ठ है । अक्षरधाम के अधिपति साक्षात् परमात्मा इस मंदिर में अखंड बिराजमान है । फिर भी हे भक्तों ! हमारे द्वारा प्रतिष्ठित मंदिरो में जो भी मूर्तियां प्रतिष्ठित है वे सभी हमारा स्वरुप है । लेकिन ऐसा नहीं समझना कि यह स्वरुप बड़ा है और यह स्वरुप छोटा है । सभी स्वरुप मेरे हैं । लेकिन अमदावाद में मैंने सर्व प्रथम मंदिर बनवाया यह हमें सभी से अधिक प्रिय है । अन्य किसी भी मंदिर के स्वरुपों में भेद की कल्पना नहीं करना ।

संप्रदाय का सर्व प्रथम मंदिर अहमदाबाद में क्यों बनवाये । इसका कारण स्वयं बताते हुए कहे कि वि.स. १८५५ में जब हम नीलकंठ के रुप में सर्व प्रथम अमदावाद शहर के दक्षिण कांकरिया तालाब के किनारे पधारे उस समय पूरे अहमदाबाद शहर में यह खबर फैल गयी कि कांकरिया तालाब के किनारे एक महातपस्वी पधारे है और वे चमत्कारिक महोयोगी भी है । यह सुनकर शहर की सारी जनता दर्शन के लिये उमड़ पड़ी । इसके बाद प्रभु की तरफ काफी लोग आकृष्ट हुए थे । वे लोग प्रभु के आश्रित बन गये । यहाँ पर प्रतिदिन अमदावाद के धनिक लोग भी आने लगे । अमदावाद में तथा अगल बगल के गांवों में रामानंद स्वामी के शिष्य भी विचरण कर रहे थे । वे लोग भी बालयोगी के विषय में सुनते थे । इसलिये वे लोग भी आकर्षित होकर बालयोगी के दर्शनार्थ गये । दर्शन करते ही उन सभी की चित्तवृत्ति उन्हीं में चिपक गयी । उनलोंगो के मन में हुआ कि आज तक हमलोगो का मन रामानंद स्वामी के सिवाय अन्यत्र कहीं चिपका नहीं फिर भी यहाँ पर क्यों आकर्षित हो गया । अंग्रेज सरकार के एरण साहब को भी यह समाचार मिला । वे भी श्रीहरि से मिलने के लिये आतुर हो गये । अपने अन्तरंग सेवक से कहे कि श्रीहरि को आग्रह पूर्वक बंगले पर पदार्पण करवाओ । उनके विशेष आग्रह पर श्रीहरि उनके यहाँ पदार्पण किये । काफी लंबी चर्चा चली । उसमें एरण साहब ने महाराज से कहा कि आप अमदावाद में अपनां एक मंदिर बनाइये जिससे यहाँ की जनता को सुख-शांति मिले । सभी को इस लोक तथा परलोक का सुख मिल सके ।

अंग्रेज सरकार का इस प्रकार का भाव देखकर मंदिर के लिये जगह प्राप्ति की सम्मति दे दी । इसके बाद निर्माणकार्य स.गु. आनंदानंद स्वामी के द्वारा करवाया ।

जिसमें मुख्य देव के रुप में श्री नरनारायणदेव को अपनी बांहो में भरकर प्रतिष्ठित किये । अनेकों विरोधके बाद भी गुजरात की राजधानी अमदावाद में अपने गूढ संकल्प को पूरा करने के लिये जीव के आत्यन्तिक कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर दिया । प्रतिष्ठा के दिन श्रीहरि ने श्री नरनारायणदेव की महिमा तथा मोक्ष प्राप्ति का रहस्य सभी को समझा दिया है । उन्होंने बताया कि जो मनुष्य मंदिर में श्रीनारायणदेव का दर्शन करेंगे वे निश्चित मोक्ष को प्राप्त करेंगे । मैं इन मूर्तियों में निवास करके सभी की सेवा स्वीकार करुंगा । सभी के मनोरथ को पूर्ण करुंगा । श्री नरनारायणदेव की महापूजा, अभिषेक तथा भगवान की जो रसोई करायेगा तथा अन्न-वस्त्र-धन-आभूषण जमीन (चल-अचल) इत्यादि वस्तु को श्रद्धापूर्वक अर्पण करेगा वह अंत में मोक्ष को प्राप्त करेगा । श्रीहरिने इस मंदिर का तथा मंदिर में प्रतिष्ठित देवों का माहात्म्य अपने मुख से वर्णन किया है । लेकिन कुछ लोग अपने स्वार्थ्य के लिये मूल संप्रदाय का आश्रय छोडकर प्रभु के द्वारा प्रतिष्ठित देवों का आश्रय छोड़कर अन्यत्र चले जाते हैं । इतना ही नहीं अपने तो जाते हैं अन्य को भी ले जाते हैं । देव का अनेक विधहानि करते हैं - लेकिन वे नहीं जानते कि अव्यक्तरुप से वे खुद अपना अहित कर रहे हैं । मंदिर की सेवा के विषय में स्वयं अपने मुख से श्रीहरिने वर्णन किया है । जो श्रीहरि की आज्ञा में रहनेवाले भक्त संयोगवश भटक गये हों वे स्वयं आत्ममंथन करके प्रभु के निज मंदिर में पूर्ववत् आ जायें इसी में उन्हें सुख और शान्ति मिलेगी ।

अनु. पेईज नं. ९ से आगे

तरह प्रतिदिन रु. २० का टिकट लेकर भीतर जाते हैं । भगवान के पास गोलक में रु. २० प्रतिदिन डालते हैं । यह कितनी बड़ी समझ की बात है इसमें आनेवाले परम्परा के लिए एक बोधपाठ है ।

बोस्टन से (यु.एस.ए.) टोरेन्टो (केनेडा) इत्यादि देशों में उस समय कुछ वर्ष पूर्व धर्मोपदेश के लिये पधारे थे । उस समय साथ में हरिभक्त तथा संतभी थे । सायंकाल बोस्टन में सभा की पूर्णाहुति करके एक सामान्य गाड़ी में ओवर नाइट पधारे । पूरे ८०० कि.मी. की दूरी वाले मार्ग में मात्र प.पू. महाराजश्री तथा ड्राईवर ही जग रहे थे । वाकी लोग सो गए थे । टोरोन्टो पहुंचकर प्रातः कालीन नित्य विधिको सम्पन्न करके भगवान की पहचान कराने भक्तो के पास चल दिये । मानव कल्याण की कितनी पवित्र भावना ।

विनय, विवेक, विनम्रता की तो साक्षात् मूर्ति है । छोटा-बड़ा- बालक-वृद्ध कैसा भी सामने आवे सभी के लिये समान । छोटा गाँव, शहर -देश या विदेश छोटे संत हो या बड़े संत सभी के प्रति समान भाव देखने में मिलता है । समभाव समदृष्टि के कारण सहजानंद से थोड़े भी कम नही है । समय की मर्यादा तो कोई आप से सीखे । नियमित दैनिक चर्या भी आपके जीवन में उदाहरण है ।

दो वर्ष पूर्व सितम्बर मास ११ ता. को हडसन नदी के किनारे न्युजर्सी, यु.एस.ए. (९,११) की तिथी को समभाव की या समदृष्टि की भावना को प्रतिष्ठित करने के लिये सभी को अनुरोधकिये । जिस में सैंकडो अमेरिकन अधिकारी तथा अमेरिकन नागरिक उपस्थित हुए । जिसे गुगल फेस बुक में प्रकाशित किया गया । यहीं आपकी विशेषता स्पष्ट होती है ।

ऐसे दिव्य पुरुष, ऐसे असाधारण व्यक्ति, ऐसे बड़े महाराजश्री के विषय में लिखते समय अनन्त विचार आते है - कभी रुके नही ऐसी भावना उत्पन्न होती रहती है ।आपका विचरण आपके मानव उत्कर्ष की भावना, अविरत धर्मयात्रा, कथा के समय उपदेशात्मक वाणी अद्वितीय है । ऐसी विभूति के दर्शन मात्र से संसार का गमनागमन रुक जायेगा - अक्षरधाम की प्राप्ति होगी ।

करोडो बन्दन प.पू. बड़े महाराजश्री के चरणों में आप शतंजीव को प्राप्त हों ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्रीजी महाराज के तीन गूढ संकल्प थे - जिस में सत्शास्त्रों की रचना करने के लिए श्रीजी महाराजने समकालीन संतो द्वारा वेदोपनिषदो का अभ्यास करवाकर सम्प्रदाय के लिये अनेकों शास्त्रों की रचना करवाये थे। उन संतो में अमुक संतो को उस समय चस्मा था, वे चस्मा पहनकरके ही शास्त्रो की रचना किये थे। ऐसे संत स.गु. नित्यानंद स्वामी का चश्मा श्री स्वामिनारायण म्युजियम के हाल नं. २ में रखा गया है। नंद संतों द्वारा लिखी गयी करीब ५०० से भी अधिक हस्त लिखित प्रति यहाँ के म्युजियम में आयी हुई है। वर्तमान में वे सभी पुस्तकें अपनी वैदिक पद्धति से रख रखाव का कार्य तथा प्रत्येक पुस्तक को कम्प्युटर द्वारा स्केन करके डीजीट लाईजेशन का कार्य भी किया जा रहा है। उस में से अधिक पुस्तकें हाल नं. २ में रखी गयी है। तथा अन्य हस्त लिखित पुस्तकें हाल नं. ९ में रखी गयी है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम का तीसरा स्थापना दिन

फाल्गुन शुक्ल ता. ३-३-१४ सोमवार को श्री नरनारायणदेव के वार्षिक पाटोत्सव के दिन श्री स्वामिनारायण म्युजियम का स्थापना दिन प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से म्युजयम का तृतीय वार्षिक उत्सव दोपहर के बाद-महापूजा महाभिषेक मुख्य होल में रखा गया है। जिस के सह यजमान रु।. ११०००/- तथा रु।. ५०००/- निमित्तक धन राशी निश्चित की गयी है। जिन्हे महापूजा में बैठने की इच्छा हो वे प्रथम क्रम के आधार पर अपना नाम यजमान पद के लिये लिखा सकते है। इसके लिये प्रत्यक्ष या फोन द्वारा संपर्क कर सकते है :

मो. ९९२५०४२६८६ दासभाई फोन नं. : ०७९-२७४८९५९७

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि दिसम्बर-२०१३

रु.५०,६८६/-	बोस्टन श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायणदेव के अभिषेक महापूजा हेतु भेंट दी गयी।
रु.५०,०००/-	प.भ. नारणभाई रामजीभाई पंचाणी परिवार, दहीसरा (कच्छ) वर्तमान बोस्टन (यु.के.)
रु.१२,०००/-	सत्संगी हरिभक्त अमदावाद।
रु.११,०००/-	जोशी जशवंतलाल ए. अमदावाद।
रु.११,०००/-	प.भ. झवेरभाई वल्लभभाई ठूमर एप्रोच मंदिर-बापूनगर
रु.११,१११/-	शकरीबहन डाह्याभाई पटेल डांगरवा, कृते परेशभाई डाह्याभाई।
रु.११,०००/-	श्री नाडोदा राजपूत समाज कर्मचारी मंडल बडोल (भाल)
रु.११,०००/-	धीरजभाई करसनभाई पटेल अमदावाद।
रु.१०,०००/-	हरजीवन करसनदास पटेल कड़ी कृते डॉ. दिनेशभाई (नवम्बर-१३ महीने का)
रु.५,९००/-	हमीबहन सवजीभाई परमार जासमकरवाला (राजकोट)
रु.५,००१/-	नारणभाई चिमनभाई मोदी, महेसाणा।
रु.५,०००/-	मूलजी नानजी हीराणी भक्तिनगर।
रु.५,०००/-	कलमेशभाई एच. शाह अमदावाद।
रु.५,०००/-	शिवमंदिर चेरीटेबल ट्रस्ट - गोडपर (कच्छ)
रु.५,०००/-	मावजी धनजी खीमाणी दहीसरा (कच्छ)
रु.५,०००/-	पटेल अमरतभाई अंबालाल ईश्वरदास (वडु)
रु.५,०००/-	पटेल कांतिभाई शंकरदास (वडु)

सूचना : श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (दिसम्बर-२०१३)

ता. ८-१२-१३	हितेश रमेशभाई गुंसाणी, नारणपुरा।
ता. १२-१२-१३	डॉ. नरेन्द्र डी. भावसार महेसाणा (प्रातः)
ता. २२-१२-१३	श्रीमती रामजी हिराणी वडदीयावाला (सायं) कृते (इष्ट) लंडन)
ता. २७-१२-१३	पटेल छनाभाई चेलदास सईज (कलोल)
ता. २९-१२-१३	श्री स्वामिनारायण मंदिर (वुलवीच- यु.के.)
ता. ३१-१२-१३	जीतेश नाथाभाई वेकरीया, रामपर वेकरा (लंडन) कृते मंजुलाबहन, सनत, पूर्वी, राजन तथा माताजी - राधाबहन।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सभी सुख का मूल "एकता"

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

किसी से प्रश्न पूछा जाय कि आप को क्या चाहिये तो सभी का एक ही उत्तर होगा ''सुख'' । इसके लिये तो सभी को प्रयास करना ही चाहिये । यथा संभव सभी करते भी है । लेकिन वह यथासंभव प्रयास नहीं है । यहाँ पर उदाहरण के रुप में एक कथानक प्रस्तुत करते है । एक वृध्ध थे । उन के घर में चार पीढी से सभी लोग एक साथ भोजन करते थे । उन वृद्ध गृहस्थ के तीन पुत्र थे । उनके पुत्र तथा उनके पुत्र - इस तरह चार पीढी के लोगों का एक साथ भोजन बनता था । घर में ३४ लोग थे । एक समान भोजन बनता था । एकता के साथ जीने की परम्परा थी । पैसे भी अच्छे थे । जय-जयकार उत्सव चलता रहता था । प्रतिदिन छोटे बच्चे दादा की गोंद में कलरव करते । थोड़ी ही देर में दादा की धोती को गीलाकर देते । कपड़ा गन्दा कर देते थे । यह सब उनके घर का आनंद था ।

एक दिन ऐसा हुआ कि, रात्रि में जब दादा सोये थे, दादा की उम्र ८८ वर्ष की थी । काफी उम्र वाले थे । जब वे सोये हुये थे उसी समय दालान में एकाएक प्रकाश दिखाई देने लगा । वे जग गये । आंख खोल कर देखे तो सामने लक्ष्मीजी खड़ी थी । दादा स्वयं लक्ष्मीजी के उपासक था । इसीलिये लक्ष्मीजी उन्हें दर्शन देने आयी थी । अभयमुद्रा के साथ हाथ में कमल का फूल था । दादा खड़े हो गये जाकर प्रणाम किये । प्रार्थना करने लगे । हे मां ! आप दया करके यहाँ आयी मेरे ऊपर कृपा करी । लक्ष्मीजी उनसे कहने लगी कि हे भक्त ! तूने पूरी जिन्दगी मेरी उपासना की है । मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न होकर यहाँ आई हूँ । मैं तुम्हारे घर में बड़ी प्रसन्नता के साथ रहती हूँ । अब मैं थक गयी हूँ । अब मैं तुम्हारे घर से जाना चाहती हूँ । इसलिये जो तुम्हें चाहिए वह मांगलो । बुड्ढा आदमी क्या कर सकता है ? बैल गाडी हांक सकता है । वृद्ध आदमी को आगे रखना चाहिये । बुड्ढे बैठ जाओं । आप को समझ में नहीं आता ।ऐसा नहीं करना चाहिए । वृद्धो के अनुभव का युवानो को उपयोग में लेना चाहिए, ऐसा करने से उनके जीवन में प्लस पोईन्ट रहेगा ।

यह दादा लक्ष्मीजी की विन्ती करते हुए कहते हैं कि मेरा पूरा परिवार इस समय सो रहा है । मैं अकेला जग रहा हूं मैं आपसे क्या मांगु मुझे ख्याल नहीं आ रहा है । इसलिये पुनः कल आप आइयेगा । सबसे बात करके मैं वरदान मांगूगा । कल आप अवश्य पधारियेगा । लक्ष्मीजीने कहा कि मैं कल इसी टाईम आउंगी । आप निश्चित करके रखियेगा । दूसरे दिन सभी एकत्रि त होकर चर्चा किये । उस दादा के बेटे-बेटी सभी की सभा एकत्रित हुई । सभी के सामने दादाने कहा कि लक्ष्मीजी अपने घर से जाना चाहती है । वे जाते-जाते हमें वरदान देने की वात की है । मैं क्या मांगू ? सभी अलग-अलग फरमान करने लगे . एक बेटेने कहा जमीन माग लीजिए । पचास वीघा - करोडो की जमीन हो जायेगी । बेटीने कहा ५ कि. सोना मांग लीजिये । गहना बनवाकर पहनेगी । लेकिन यह ठीक नहीं । कोई बैंक बेलेन्स मांगा ! लम्बी चौडी चर्चा के बाद भी मेल नही पड़ा । बड़े बेटेने कहा कि आप शभी को बड़ा किये है, सभी का लालन-पालन आपने किया है, सभी की इच्छा भी आप जानते हैं । आप ही अपने विचार से जो उचित हो वह मांग लीजिये । आप के ऊपर हम सभी छोड़ दिये । दूसरी रात्रि में दादा सोये नही, माला फेरते रहे । जब मध्य रात्रि हुई तो, पुनः वैसा ही प्रकाश प्रगट हुआ । मांग जल्दी, मांग । क्या निश्चित किया है । वृद्ध ने कहा कि आप मुझ पर प्रसन्न हों तो हमे अन्य कुछ नहीं चाहिए, एक ही वरदान हमें आप देदीजिये, वह यह कि हमारे घर में सदा एकता (संप) बनी रहे । लक्ष्मीजी का चेहरा बदल गया । क्यों माताजी आप ढीली पड़ गयी । मुझे तुम्हारे घर में से जाना था । तुम एकता मांग रहे हो । जहाँ पर एकता होती है वहाँ से में कही जा नहीं पाती । अब लक्ष्मीजी पुनः वहीं रह गयी । किस प्रताप के प्रभाव से ? एकता के प्रभाव से । इसकी खबर थी महात्मा तुलसीदासजी को - तुलसीदासजीने

रामायण में लिखा है कि –

जहाँ सुमति तह संपति नाना । जहाँ कुमति तंह विपतिनिधाना जहाँ सुमती होती है वहाँ जय जयकार होती है। इस उपाय का आप प्रयोग कर सकते है। इस एकता रुपी उपचार का कोई चार्ज नहीं है । कोई फीस नहीं है । यदि फायदा हो तो दूसरो को बताने की जरुरत है। इसकी कोई रोयल्टी नहीं है। इस उपचार से घर में सदा लक्ष्मीका निवास होगा । स्वामिनारायण भगवान आप सभी का कल्याण करें।

●

भक्तवत्सल भगवान

(साधु श्री रंगदास – गांधीनगर)

जीवन में कितनी वातें मानने में नही आती ऐसा होता है । अशक्य लगती है। बुद्धि के तर्क से उसे समझा नही जा सकता। परंतु वह सत्य होती है। इस पर एक प्रसंग वांचने लायक है –

भेसजाल गाँव की वात है । भेसजाल गाँव में सत्संग की परम्परा थी । श्रीजी महाराज के समय की यह वात है। भेसजाल गाँव में राणकायाबाई नमका एक हरिभक्त रहता था। उनके घर में भक्ति का वातावरण था। उन्हीं की सगी बहन भक्ति के रंग में रंग गयी थी । भगवान की अखंड भजन भक्ति करती रहती। बाद में उन्होंने निश्चित किया कि इस जन्म में कही किसी के साथ विवाह संस्कार नहीं करना है । ''रे सगपण हरिवरनुं साचुं'' ऐसा मन में दृढ करके सांख्ययोगी हो गयी । इस में रहकर नीति नियम का पूर्णतया पालन करती थी। एक दिन शारीरिक आपत्ति आ गयी । कुछ काम करते समय गिर गयी । जिस में उनका हाथ टूट गया। अतिशय पीड़ा होने लगी। किसी भी तरह हाथ ठीक नहीं हो रहा था। उस समय उनके सगे-सम्बन्धी उन्हें चूडा गाँव के उत्तम वैद्य के पास लेजाने का निश्चय किये। उस समय वह बहन अपने सम्बन्धियों से कही कि मैं सां.यो. हूँ। इस जीवन में किसी पुरुष का स्पर्श नहीं किया है । अब इस पीड़ा का सहन करुंगी लेकिन किसी पुरुष के हाथ का स्पर्श नहीं करुंगी । यह सुनकर उनके सम्बन्धी काफी दुःखी हुए। आप अपनी पीड़ा तो देखिये। आप का हाथ टूट गया है। इससे अधिक पीड़ा हो रही है। यह दुःख हमसे देखा नहीं जा रहा है। इसे जोड़े बिना नही चलेगा। आपको चलना ही पड़ेगा । ऐसा विचार कर सभी उन्हें बैलगाड़ी में बैठाकर प्रातः लेजाने का निश्चय किये। उस समय सां.यो. बाई को बहुत दुःख हुआ और महाराजकी स्तुति कर ने लगीं –

''मंगल मूर्ति महा प्रभु, सहजानंद सुखरुप ।
भक्ति धर्म सुत श्रीहरि, समरु सदाय अनूप ॥''

बहुत दुःखी होकर रोने लगी, हे महाराज ! मेरा सां.यो. धर्म नष्ट हो जायेगा, इशलिये दया करके भक्तिबाई की सच्ची धर्मनिष्ठा, प्रेम देखकर मध्यरात्री में महाराज ने दर्शन दिया। दर्शन होते ही मन का उद्वेग खत्म हो गया। आनंद का प्रसार हो गया। अन्तर में शांति मिलने लगी। हे प्रभु ! दीन बन्धु ! दयालु ! आप मेरी प्रार्थना सुनकर मेरे ऊपर कृपा किये मुझे दर्शन दिये। महाराज ने कहा कि हे बहन ! तुम्हारे हाथ तो ठीक करने आया हूँ। ऐसा कहकर उस बहन का हाथ अपने हाथ में लेकर फिराये तो टूटा हाथ अपने आप बैठ गया। महाराज इतना काम करके अदृश्य हो गये। प्रातः होते ही उनके सम्बन्धी गाड़ी लेकर आये साथ लेजाने के लिये। बहन को बुलाने गये तो, सां.यो. बहन ने अपने हाथ को दिखाते हुए कहा कि रात में प्रभु स्वयं आकर मेरा हाथ ठीक कर दिये हैं। उनके सगे संबन्धी यह चमत्कार देखकर धन्यता का अनुभव करने लगे। उनकी भक्ति की प्रशंसा करने लगे । सां.यो. अन्य बहने भी यह चमत्कार देखकर महाराज के प्रति और दृढता से भक्ति करने लगी। उन्हें यह आभास हो गया कि महाराज निश्चित सहायता करते हैं।

भक्त के हृदय की पुकार, सच्चे हृदय की प्रार्थना भगवान को विचलित कर देती है। भगवान भक्त वत्सल है । इस तरह भगवान कितने भक्तों को वात्सल्य भाव से सहायता की है। हम भी इसी तरह सच्चे भाव से तथा दृढता से भगवान की भक्ति करें। इसी मार्ग पर चलकर भगवान के कृपा का पात्र बने।

साभार स्वीकार्य

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से वचनामृत के लोया के तीसरे के आधार पर संतो-हरिभक्तो के आख्यानो सहित ''निश्चय तथा महिमा का रस थाले'' पुस्तिका शा.स्वा. हरिजीवनदासजी (हिंमतनगर) द्वारा प्रकाशित की गयी है।

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"अहमदाबाद में नरनारायणदेव"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

साबरमती के किनारे (नारायणघाट) से तीस कि.मी. के घेराव में बड़ावन था । सिर्फ उतने ही विस्तार को पद्मपुराण में धर्मारण्य कहा है । जहाँ धर्मदेव तथा भक्तिदेवी ने कठोर तप किया था । बारह वर्ष बाद भगवान प्रसन्न हुए थे । तब भगवानने वरदान मांगने को कहा तो मूर्ति देवीने कहा कि प्रभु ! आपके जैसे चार पुत्र प्रदान कीजीए । परमात्माने कहा हे धर्म । मैं आपके तप से अति प्रसन्न हुआ हूँ आपके पुत्र के रुप में अवतार धारण करुँगा । भगवानने सोचा मेरे जैसा अनंतकोटि ब्रह्मांड में कोई नहीं है । और मुझसे अधिक भी कोई नहीं है । तो मुझे ही जाना होगा अपना वचन पूर्ण करने हेतु । समय व्यतीत होते वैवस्वत मन्वंतर में उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र में फाल्गुन कृष्णपक्ष-एकम को धर्म तथा मूर्ति से भगवान चार स्वरुप में प्रगट हुए । चारो मिलकर एक ही स्वरुप है । मार्कंडेय ऋषिने नामकरण संस्कार किया । नर, नारायण, हरि तथा कृष्ण । नर तथा नारायण स्थूल दृष्टि से भिन्न स्वरुप है । परंतु वास्तव में आध्यात्मिक दृष्टि से वे भिन्न नहीं है । भक्त चिंतामणी में निष्कुलानंद स्वामी इस रहस्य को समझाते हैं ।

"छो तो एकने दिसो छो दोय,
तेनो भेद जाने न कोय"

उसके बाद उपनयन संस्कार किया गया । दीक्षा विधान हुआ । नरनारायणदेव बद्रिकाश्रम में तप करने चले गये । तथा हरिकृष्ण को धर्मदेव तथा मूर्ति देवीने कहा कि आप मेरी आज्ञा अनुसार जीवन व्यतीत करें तो माता-पिता ने उन्हें गृहस्थाश्रम में रहने की आज्ञा की । हरि भगवान वैकुंठ में (लक्ष्मी-नारायण) स्वरुप में है और कृष्ण भगवान गोलोकमें (राधाकृष्ण) के स्वरुप में है । भगवान स्वामिनारायण का पृथ्वी पर अवतार धारण करने का मुख्य प्रयोजन क्या था ? वह यह कि पृथ्वी पर एकांतिक धर्म का स्थापन करना । जीवात्माका कल्याण करने हेतु पृथ्वी पर कार्य किये तथा मैं जब इस लोक से विदा लूं तो भी मुमुक्षु जीवात्माओं का मोक्ष कैसे हो । यह ध्यान में रखकर सत्संग में महामंदिरो का निर्माण करवाया । सत्शास्त्रो की रचना की गयी । आचार्यो की स्थापना की गयी । त्यागी गृही को दीक्षा का विधान किया । महाराज जब इस पृथ्वी पर थे तो जो उपदेश किये उसे मुक्तानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी तथा शुकानंद स्वामी ने अक्षरस्वरुप में संग्रहित किये । इसीलिए जगत को वचनामृत नामक शास्त्र की अनमोल भेंट मिली । परिणाम स्वरुप श्रेष्ठ ग्रंथ की प्राप्ति हुई । एक समय महाराज अहमदाबाद में बिराजमान थे तब समग्र अमदावाद के हरिभक्तगण जिस में लालदास गोरा, हीराचंद चोक्सी आदि ने महाराज से कहा कि महाराज आप अहमदाबाद में कम पधारते है . आप नही होते है तब हरिभक्तो को दर्शन का सुख प्राप्त नहीं होता । इसीलिए आप अहमदाबाद में मंदिर का निर्माण करें । और यही महाराज का संकल्प था । इसीलिए महाराजने आनंदानंद स्वामी को आज्ञा की । आनंदानंद स्वामी पूर्वाश्रम में राजस्थान के राजा रमणसिंह थे । राम भगवान के उपासक थे । ईसीलिए सबकुछ छोडकर अयोध्या आ गये थे । अयोध्या में सरयू नदी के किनारे राम नाम का जप करते थे । अयोध्या के राजा को राजगुरु की आवश्यकता थी । इसीलिए उन्होंने डुग्गी पिटवाई कि बड़े मंदिर के माठीधीश की नियुक्ति करनी है । तो जितने भी संत थे माठाधीश थे सभी एकत्र हो गये । राजा को ख्याल आ गया कि वे सभी लोभ-लालच में एकत्र हुए है । योग्यता नहीं है । तो किसीने राजा से कहा कि सरयू नदी के तट पर राजारमणसिंह राजस्थान के राजा हैं वे तप करते हैं । राज ने उनको विन्ती भी कि वे राजगुरु का पद संभाले तब आनंदानंद स्वामीने उत्तर दिया कि मै सब कुछ

छोडकर आया हूँ। इस में मेरा कल्याण नही है। कोई मेरे चरण स्पर्श करें या मुझसे संवाद करे इस में मेरा कल्याण नही है। अयोध्या के राजाने कहा कि आप मठाधीश होंगे तो कई लोगो का कल्याण होगा आपके इष्टदेव राम भगवान की जन्मभूमि है। इस प्रकार आनंदानंद स्वामी अयोध्या के मठाधीश हुए। सभी को राम भगवान की महिमाका गुण गान करते और प्रार्थना करते कि प्रभु उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन दें। एक दिन राम भगवानने स्वप्न में आकर कहा आपको यदि प्रत्यक्ष दर्शन करने हो तो गुजरात में जाइये। गुजरात में आये तो समाचार मिला कि महाराज सौराष्ट्र में है। सौराष्ट्र में पता किया तो मालूम हुआ कि महाराज गढपुर में है। वहाँ महाराज सभा में बैठे थे। महाराज स्वामी को पहचान गये। स्वामीने दंडवत प्रणाम कर के सभा में बिराजे उस समय उनको महाराज में भगवान राम के दर्शन हुए। महाराजने स्वामी को संत दिक्षा दी। इस प्रकार स्वामी मठाधीश में से आनंदानंद स्वामी बने। भवानने आनंदानंद स्वामी को मंदिर निर्माण का कार्य सौंपा। चौदह संतो के मंडल के साथ आनंदानंद स्वामी अहमदाबाद पहुंचे। स्वामी चिंता में थे तो भगवानने स्वप्न में दर्शन दिये। हाथ में सोने की छडी थी। भगवानने कहा आइये मैं मंदिर दिखाता हूं। सोने की छडी से लकीर खींच कर आकृति बनाई तो स्वामी को चिंता हुई की किस प्रकार यह सब कुछ हो पायेगा। आनंदानंद स्वामी सोच ही रहे थे कि आज जहाँ वर्तमान में घनश्याम महाराज की मूर्ति है वहाँ महाराज ने जमीन के सामने दृष्टि की तो सोने का मंदिर बाहर आया। स्वामीने समस्त दृश्य अंतर में उतार लिया। स्वामी बुद्धिशाली, प्रतिभाशाली और मेधावी संत थे। प्रसन्न चित्त के साथ उन्होंने मंदिर निर्माण कार्य आरंभ किया।

मंदिर तैयार हुआ और उसी प्रकार बनावाया जैसा महाराजने दिखाया था। मात्र डेढ वर्ष में मंदिर निर्माण कार्य पूर्ण किया। मूर्ति प्रतिष्ठा के लिए महाराज को समाचार भेजा। उस समय महाराज लोया में थे। महाराजने मयाराम भट्ट के पास मुहूर्त पूछा। प्रभु ! फाल्गुन शुक्ल पक्ष तीज का सबसे उत्तम समय है। वर्तमान में नरनारायणदेव का मंदिर जिस स्थान पर है उसी स्थान पर मूर्तिदेवी का सूतिका गृह था जिस स्थान पर नरनारायणदेव के प्रथम चरण पड़े थे। उसी स्थान पर नरनारायणदेव का सिंहासन बनवाया गया है भगवान का सिंहासन बहुत गहराई तक खोदा गया है। वरुणदेव का आह्वान करके कछुए के स्वरुप का निर्माण किया गया। कहा जाता है कि भगवान स्वयं प्रकट स्वरुप में आऐ तो पृथ्वी उनका भार नहीं सह सकती इसीलिए भगवान मनुष्य के स्वरुप में आते हैं। इसीलिए कच्छप भगवान के ही अवतार है और भगवान का भार भगवान ही सह सकते हैं। इस कारण कछुए के स्वरुप का एक स्तंभ बनवाया गया। उस पर बड़ी शिला रखी गयी . उस पर सिंहासन बनवाया गया। फाल्गुन शुक्ल पक्ष-३ को मानो मोक्ष का सुवर्ण दिन बन कर आया। श्रीहरिने यज्ञशाला में प्रथम नारायण भगवान में प्राण का आह्वान किया। और भगवान को यज्ञशाला में से अपनी बाहों में लेकर मूर्ति की स्थापना की। उसके बाद भगवान की स्थापना हुई। कुछ पलों तक नरनारायणदेव के सामने देखते रहे। उसके बाद राधाकृष्णदेव श्री धर्मभक्ति तथा श्रीहरिकृष्ण महाराज की मूर्तिओं की प्रतिष्ठा विधिभी स्वयं किये। श्रीहरि ने आरती की। लाखों भक्तोंने नरनारायणदेव का जयजकार किया। सभी संतो तथा हरिभक्तों को सभा में बैठकर प्रभुने कहा कि, भक्तजनो ! हम श्री नरनारायणदेव के निमित इस धरती पर आए। इसीलिए मध्यपीठ पर में श्री नरनारायणदेव को स्थापित करके संप्रदाय का प्रथम तीर्थधाम बनाया। बद्रिकाश्रम में जाना बहुत कठिन तथा दुर्गम है। परंतु हे भक्तो ! इस मंदिर में आकर श्री नरनारायणदेव के दर्शन करने पर बद्रिकाश्रम के समान पुण्य प्राप्ति होगी। नरनारायणधेव और हम में कोई अंतर नहीं। नरनारायणदेव में रहकर आपके संकल्पो को पूर्ण करेंगे।

नरनारायणदेव की जो प्रेम से सेवा करेंगे जो कुछ भी अर्पण करेंगे मैं उनका अक्षरधाम में स्वीकार करुंगा। इस प्रकार श्रीजी महाराजने श्री नरनारायणदेव को स्थापित करके वचनामृत में कहा "श्री नरनारायणदेव का स्वरुप मेरा ही स्वरुप है यह जानकर आग्रह करके सर्व प्रथम श्रीनगर में स्थापित किया है। इसीलिए श्री नरनारायणदेव

तथा हममें थोड़ा भी भेद नहीं समझना । वही ब्रह्मांड के निवासी भी है । (अम. ६) इस प्रकार हजारो वर्षो के बाद नरनारायणदेव की जन्मभूमि पर तीन शिखरों वाले भव्य मंदिर का निर्माण हुआ । माता-पिता के साथ अपने स्वरुपों को स्थापित करके श्रीहरिने आध्यात्मिक कार्यालय का प्रथम प्रधान केन्द्र स्थापित किया । स्वामिनारयण भगवान ने अहमदाबाद में कितना भव्य कार्य किया वह प्रेमानंद स्वमीने कीर्तन में कहा है.

वहाले अहमदाबाद मां आवी जी रे,
प्रगट कीधुं श्री बद्रिधाम,
जन जावे जोवाने देश देशना जी रे,
शोभे प्रेमानंदनो श्याम.''

बद्रिकाश्रम में रहकर भरतखंड की प्रजा के कल्याण हेतु नरनारायणदेव ने तप किया । अपने तप का फल अपने आश्रितों को प्रदान किया । इसीलिए हमें घर बैठे सबकुछ मिल गया है । हमें सिफी इष्टदेव की आज्ञा का पालन करना है । अंतःकरण शुद्ध रखकर अनन्य भक्ति भक्ति करके नरनारायणदेव का शरण रखना सत्संग में सुख समान है । सत्संग हमारे लिए परिवार समान है । ही धर्म नियम है । एक ही अक्षरधाम में जाना है । सदैव साथ रहना है । इस बात का आनंद है । सत्संग में दिन-प्रतिदिन आगे प्रगति करते रहें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

●

भगवत् बल ही सर्वोत्तम बल है

- सांख्ययोगी कोकिलाबहन (सुरेन्द्रनगर)

जिस प्रकार सभी मणिओं में चिंतामणी श्रेष्ठ है । उसी प्रकार सभी बल में भगवद् बल श्रेष्ठ है । जिस प्रकार सभी गायों में कामधेनुं गाय श्रेष्ठ है । उसी प्रकार भगवान के आश्रय में जीवन व्यतीत करना ही श्रेष्ठ है । विश्व में व्यक्तियों के पास अनेक प्रकार के बल होते हैं । धन, बल, कुटुंब-बल, बाहु-बल, जप-बल, साधन-बल, सत्ता-बल, बुद्धि-बल, मनो-बल, आत्म-बल, शस्त्र-बल, अस्त्र-बल, विद्वत्त का बल इन सब के अंत में माया का बल है । जिसे-जितना भगवत् बल अधिक है वह उतना ही महान है । भगवत् बल वाले को ही सभी प्रकार की सिद्धि और सफलता प्राप्त होती है । इस लिए यदि सुखी होना है तो सभी बलों को छोड़कर भगवत बल मजबूत करना चाहिए । बाकी सब कुछ तो एक बार में ही जैसे बादल बिखर जाते हैं वैसे बिखर जाता है । इसलिए निर्भय बनना हो, निर्दोष बनना हो, निर्वासनिक बनना हो, निर्विकारी बनना हो तो एक भगवद् बल से ही जीना चाहिए । उसी की रक्षा संभव है । वही श्रेष्ठ निष्ठा है । ऐसी दृढ मान्यता रखनी चाहिए ।

हमें भगवान प्रगट रुप से मिले है । इसीलिए किसी भी प्रकार का भय नही रखना चाहिए । अनंत शक्तिमान परमात्मा विश्व को चलाते हैं । अनेक प्रकार के दुःखो को अवश्य दूर करेंगे । दुःखो को दूर करने के प्रयास अविरत करने चाहिए । परमात्मा की दिव्य शक्ति अवश्य काम करेगी । मुझे तो परमात्मा का दृढ आश्रय है । इसीलिए समय आने पर मुझे जो वस्तु चाहिए वह अवश्य प्राप्त होगी । भगवद् बल रखने से कदापि निरासा प्राप्त नहीं होती ।

प्रगट भगवान प्राप्त हुए है इस वात का गुमान सदैव करना चाहिए । आपति आने पर धीरज रखकर भगवान पर श्रद्धा रखनी चाहिए । भगवान निष्ठा ही आत्यंतिक कल्याण प्राप्त करवा सकती है । निष्ठा मनुष्य को निर्भय बनाती है । निर्वासनिक बनाती है । भय आसक्ति में से प्राप्त होता है । मान की आसक्ति हो तो अपमान का भय होता है । धन की आसक्ति हो तो चोर लूंटेरो का भय होता है । स्त्री पुरुष की आसक्ति हो तो काल का भय होता है, देव में आसक्ति हो तो मृत्यु का भय होता है । भगवानमें आसक्ति हो तो निर्भय हो जाते हैं । एकांतिक भक्त भगवान को प्राप्त करने हेतु दो प्रकार का अभ्यास करतें हैं । (१) देह से आत्मा को भिन्न करके ब्रह्मरुप होना (२) आत्मा को परमात्मा में जोडना । यही जीवन की सफलता है । जैसे देह में बुद्धि है वैसे भगवान में निष्ठा होगी । देह बल के स्थान पर भगवद् बल आ जाये तो सुन्दर ढंग से जीया जा सकता है । उसी प्रकार भगवान के सहारे जीने से जीवन पूर्ण होता है ।

प्रत्येक आत्मा में परमात्मा साक्षात् बिराजमान है । भगवान जिस प्रकार अनंत सामर्थी तथा चिरन्तयुक्त है वैसे ही प्रगट रुप से सम्प्रदाय में भी बिराजमान है । सर्वकर्ता, सर्वाधार तथा सर्वसुखकारक है । उनको स्वीकार्य करने

की आवश्यकता है। हम अकेले रहते है तब हमें भय, शक्ति, विकार का आभास होता है। आत्मा कभी अकेली होती ही नही है। सदैव वह महाराज के साथ होती है। प्रभु से दूर नही होना चाहिए। माया विकारी है। उसमें बदलाव होते रहते है। प्रभु को भूलकर देह में आसक्ति के भय का उद्‌भव होता है। भगवान की स्मृति में रहने से निर्भय हो जाते हैं। भगवत् बल या निष्ठा में कमी होने पर ही भय, आसक्ति तथा विकारो का वास होता है। अपने अंतःकरण में विकार के स्थान पर भगवान को रखकर नित्य उनका स्मरण-दर्शन करने पर वासना, विकार, भय दूर हो जाते हैं। दूसरें सभी बलों को गौण करके अर्जुन की तरह सिर्फ भगवद् बल रखना चाहिए। अपने कल्याण की चिंता स्वयं नही करनी चाहिए, मोक्ष के दाता भगवान या भगवान के संत ये दोनो ही है। उनसे कल्याण प्राप्ति संभव है। इसीलिए श्रीहरि रुपी नाव में बैठकर सद्‌गुरु संत का स्थान प्राप्त करना चाहिए। साधन तो यथार्थ शरणागति को स्वीकार्य करने के लिए है। और भगवद् बल के बिना समस्त साधन शून्य है.

आत्मबल से देश-दुनिया के विकारो से बच सकते हैं। जब कि भगवद् बल से आत्मा, परमात्मा के आनंद को प्राप्त किया जा सकता है। आत्मबल देह के सुख-दुःख में उपयोगी है। जब कि भगवद् बल सभी स्थानों पर उपयोगी है। अंतकाल में कोई बल काम नही आता। इसलिए आत्मबल से अधिक श्रेष्ठ भगवत् बल है। इसीलिए दादा खाचर, लाडुबा, मीराबाई, शबरीबाई, प्रहलादजी या सगाराम बाधरी की भांति भगवद् शक्ति होनी चाहिए। वही व्यक्ति महान है। कोई बड़ा या छोटा हो लेकिन भगवद् शक्तिवाले पुरुष सदैव वंदनीय है। मृत्यु के समय भी यदि भगवद् शक्ति-निष्ठा हो तो मृत्यु का भय नहीं रहेगा। अंतकाल में, रोगादिक आपत्काल या अकस्मात आदि आपत्ति में सिर्फ भगवद् शक्ति ही काम आती है।

रावण तथा दुर्योधन कितने ही शक्तिशाली थे। लेकिन भगवद् निष्ठा उनमें नहीं थी इसलिये उनका नाश हो गया। अर्जुन की रक्षा भी इसी भगद् शक्ति के कारण हुई। ईसिलिए जिसके पास भगवत् शक्ति है वही एकांतिक भक्त कहा जाता है। वही सच्चा सत्संगी है। उसे काल, कर्म, माया छू भी नही सकती। रावण को देह शक्ति थी। युधिष्ठिर राजा को शास्त्र बल था धर्मबल था। लेकिन अर्जुन के पास भगवद् शक्ति का योग था ईसीलिए वे महान थे। इसीलिए कहते है कि निष्ठा शक्ति इतनी महान है कि छोटा व्यक्ति भी यदि हो तो उसकी चरणरज बनकर रहना चाहिए। कल्याण के लिए एकमात्र साधन निष्ठा ही है। जो सर्व में कर्तारुप भगवान को मानता है। वही यथार्थ सुखी है। प्रत्येक क्रिया में श्वासोश्वास में एक ही भावना रखनी चाहिए की मेरे भगवान ही मेरे साथ है और वह जो करते है वही होता है। ऐसी भगवद् शक्ति जिस में हो वही देह से मुक्त होता है। और सभी सद्‌गुणों का वास उसमें होता है।

●

गोपी बने गिरधारी

– जानकी निकीकुमार पटेल (घाटलोडीया)

कच्छ का छोटा सा गाँव धमड़का गाँव। जहाँ ब्रह्ममुनि ने अभ्यास किया था। जिस गाँव में ब्रह्मानंद स्वामी को एक जोगी मिले थे वे अपने पेट में से आंत निकालकर नदी में धोते हुए इस जोगी ने ही वे स्वामी को कहा कि आपकी इसी खीजड़ा के पेड के नीचे आपको भगवान (स्वामिनारायण) मिलेंगे। तद् अनुसार भगवान मिले।

एकवार स्वामिनारायण भगवान यहाँ नंगे पैर पधारे थे। प्रभु के चरण में से करणीबाई ने अड़ारह कांटे निकले थे। चरणों में से लहूं निकल रहा था। करणीबाई ने प्रभु को डाटते हुए कहा कि, यहाँ वहाँ दौड-दौड करते हो शरीर का कोई ख्याल नही है। पाँव में जूता पहनने में क्या जा रहा है?

ऐसा मातृवात्सल्य प्रेम मिला था जिस गाँव में उस गाँव का धरतीकंप में ध्वंश हो गया है। परंतु गाँव का इतिहास अभी भी संप्रदाय के ग्रंथो में जीवंत है यह गाँव श्रीजी महाराज की अलौकिक, दुर्लभ लीला से भरपूर है। करणीबाई ने एक ऐसा कार्य किया था जो महाराज ने ४९ वर्ष की उम्र में कोई भी नही कर सकता था। बात इस प्रकार से है:-

एकबार श्रीजी महाराज धमकड़ा गाँव में पधारे थे। रायधणजी या कोई पुरुष उपस्थित नही थे। बहन अकेली ही बैठी थी।

महाराज ने कहा, कोई पुरुष उपस्थित नही है । इस कारण हम वापस जा रहे थे । कर्णिबाई ने कहा, ''महाराज ! इस में क्या आपत्ति है । आप बिराजिए । अभी सब संतो में से वापस लौट आएगें । महाराजने कहा पटारे में से नये वस्त्र निकाल कर दिजिये । साडी, वस्त्र, अलंकार धारण करके महाराज बहनो के मध्य में बिराजे । बहनो के वस्त्र में भी सोभा अप्रतिम थी । महाराजने कहा कि कोई संत आए तो कह देना की महाराज यहाँ नही है ।

थोडी देर में ब्रह्मानंद स्वामी प्रभु को खोजते हुए आये । स्वामीने पूछा । ''कर्णिबाई, महाराज यहाँ है ? कर्णिबाईने कहा, ''नही महाराज यहाँ कहा से होंगे ?'' स्वामीने कहा तो मंच पर बैठे यह स्त्री कौन है । अपने इष्टदेव को ऐसे अनोखो वस्त्र में देखकर ब्रह्ममुनि के मुख मे से सरस्वती काव्यरुप से बहने लगी ।

त्यारे श्वेत वस्त्र उतार्या रे, गोपी बनीया गिरधारी ।
वाले लाल वस्त्र दन धार्या रे, गोपी बनीया गिरधारी ।
पहेर्या धाघरडो धेरायो रे, गोपी बनीया गिरधारी ।
शोभे करावो कामणगारो रे, गोपी बनीया गिरधारी ।
शिर गुंथीयुं पटीया पाडी रे, गोपी बनीया गिरधारी ।
नवरंग ओढ़ाडी साडी रे, गोपी बनीया गिरधारी ।
कहे ब्रह्मानंद अति शोभे रे, गोपी बनीया गिरधारी ।
जोई सखीयुंना मन लोभे रे, गोपी बनीया गिरधारी ।

हरिसखा ब्रह्ममुनिने महाराज को ऐसे नूतन वस्त्रो में देखकर बहुत आनंदित हुए । समयोचित ऐसा कीर्तन बनाया । करणीबाई के प्रेमभाव वश होकर श्रीजी महाराज ने अपने वस्त्र प्रसादी के कर दिये । सखा तथा प्रेमीभक्तों के लिए यह चरित्र मोक्षमार्ग का रास्ता बनाया ।

●

"मा" के साधे

- पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल, ता. कडी)

गुंदाली गाँव में काठी ज्ञाति के एक वृद्धा रही थी उनके दो पुत्र थे । खेती करते थे । वृद्धा सत्संगी थी । पुत्रों को सत्संग से अधिक लगाव था ।

एकबार साम को दो साधु आये वृद्धामाँ ने रुकने के लिए स्थान दिया । भोजन हेतु खीचड़ी खिलाई । साधु ने तीन ईटों से चूल्हा बनाकर खीचडी को पकने के लिए रखा ।

गाँव में बात होने लगी कि स्वामिनारायण के संत आये है वे गाँव को बिगाड देंगे । इसलिए उनको नीकालो । गाँव के एक मुखिया जो काठी था उसने वृद्धा मां से कहा कि इन स्वामिनारायण के संतो को घर में क्यों लाई हो ? वृद्धा माँ ने कहा लेकिन ये तो साधु हे, मुखिने हठ की तो भी निकाल दो उन्हें । वृद्धा माँ ने कहा कल ये जाने ही वाले है । मुखिया ने कहाँ नही इसी समय नीकालों कहकर धक्का देने लगा । वृद्धाने कहा ये पूरे दिन के भूखे है । खीचड़ी तो खाकर जाने दो । नही, नही, अभी जाओ कहकर खीचड़ी भी पतीली को लात मार दी और सारी खीचड़ी गिर गई । साधुओं ने वृद्धा मां को आशीर्वाद दिये और चले गये ।

वह मुखिया भी चला गया । वृद्धा माँ रोने लगी । पुत्र केत से वापस लौटे माँ से रोने का कारण पूछा । माँ ने सारी बात बताई और कहा कि तुम जेसे जवान पुत्रो के होने पर भी मेरे साधुओं को भूखा जाना पड़े । पुत्रों को हुआ कि ''मेरी माँ के साधु'' को निकालने वाले को हम देख लेंगे । एक गाडी में सामान भरकर माँ को दूसरे गाँव भेज दिया ।

हा में तलवार लेकर गाँव की सरहद पर पहुँचे जहाँ मुखिया बैठकर हुक्का पीते-पीते अपनी बड़ाई कर रहा था । वहाँ जाकर पूछा मेरी मां के साधुओं को किसने भगा दिया । मुखीने कहा ''मैने'' उसी समय उसका सिर धड़ से अलग कर दिया । दश लोगो को और मार कर वे भाग गये लेकिन गाँव के बाहर पकड़ा गये ।

परंतु ''मा के साधु'' बोली बात के कारण उन्हें मोक्ष मिला । इन भाईयों के नाम का पता नही है लेकिन ''वचनामृत'' में महान भक्त की पंक्ति में ''गुंदाली गाँव के दो काठी हरिभक्त'' इस नाम से याद किये जाते है । भगवान के भक्तों का पक्ष रखने पर उसका अत्यधिक महिमा है ।

विशेष नोंध:

रतु खांट का मोटी आदरज गाँव गांधीनगर के पास है । क्योंकि आदरज गाँव अन्य और भी है ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में धनुर्मास धून महोत्सव का आयोजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के पवित्र सानिध्य में तथा समग्र धर्मकुल की उपस्थिति में ब्रह्मनिष्ठ संतो तथा हरिभक्तो की विशाल उपस्थिति में १६ डिसम्बर से पवित्र खरमास में धून महोत्सव का आरंभ किया गया । सुबह की कड़क ठंडी में भी छोटे बच्चो से लेकर वृद्ध हरिभक्त भी श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून का लाभ लिये । यह महीमा भगवान की भजन करने का है । इस महीने की धून में हजारो की भीड़ होती है । मंदिर में बिराजमान देवो के नाम से, तथा संतो के नाम से भी धून की गयी । स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा कोठारी पार्षद दिगंबर भगत का आयोजन भी किया गया । सभा मंडप को रोशनी से सजाया गया । ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी, जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी, राम स्वामी तथा सभी संत-पार्षद मंडल तथा हरिभक्तो की सेवा प्रसंशनीय है ।

इस खरमास में सभी धून के यजमानों को सुंदर ट्रावेलींग बेग तथा दैनिक धून के यजमानो को प्रसाद भेट स्वरुप दिया गया । (शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष में धमासणा गाँव में कथा पारायण तथा ९ वें शाकोत्सव का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. भावि आचार्य महाराजश्री के कृपा-आशीर्वाद से श्रीहरि की चरण रज से अक्षरधाम तुल्य तथा संप्रदाय के महान संत स.गु. गुरुचरणरतानंद स्वामी के जन्मस्थान स्वरुप धमासणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में सा.योा. श्री गंगाबाई तथा सां. कमलबाई की शुभ प्रेरणा से ता. २०-१२-१३ से ता. २४-१२-१३ तक श्रीमद् भक्तचिंतामणी के अंतर्गत श्रीहरि ऐश्वर्य दर्शन (प्रथम प्रकरण) की सुंदर कथा स.गु. शास्वा. रामकृष्मदासजी तथा शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । समग्र प्रसंग के प्रेरक स.गु. स्वामी जयप्रकाशदासजी गुरु स.गु. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी (शिकागो) तथा स.गु.शा. स्वामी अभयप्रकाशदासजी गुरु महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (वोशिंग्टन) तथा मार्गदर्शक सगु.स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री) थे । सहिंता पाथ में स.गु.सा.स्वा. बालस्वरुपदासजी (मूळी) तथा सगु. स्वा. निलकंठदासजी बिराजे थे ।

इस प्रसंग पर ता. २४-१२-१३ को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने पधारकर आशीर्वाद दिये । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू. बड़ी गादीवालाश्रीने बहनो को आशीर्वाद दिये । शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया । हरिभक्तों की सेवा भी प्रेरणारुप थी ।

व्याख्यान माला में शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी (धोलका), शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर), शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (मोटी आदरज) तथा स्वामी धर्मप्रवर्तकदासजीने सुंदर कथा की ।

अंत में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी आदि संतोने प्रेरक वाणी का लाभ दिया । (कोठारीश्री धमासणा)

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष में मोटेरा गाँव में श्रीमद् भागवत् अंतर्गत नवम स्कंध(राम चरित्र) सप्ताह पारायण का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एव समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से अ.नि. सविताबहन भाईलालबाई की स्मृति में तथा अ.सौ. कमलाबहन अंबालाल पटेल के संकल्प से श्रीहरि के चरणकमल से प्रसादीभूत मोटेरा गाँव में ता. ३०-१२-१३ से ता. ५-१-१४ तक श्रीमद् भागवत शास्त्र अंतर्गत नवम् स्कंधरामचरित्र सप्ताह पारायण (रात्रीय) तथा साथ साथ दिव्य शाकोत्सव का भी आयोजन किया गया । कथा के वक्तापद पर स.गु.शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) बिराजमान थे ।

पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । शाकोत्सव का वधार करके मोटेरा गाँव को पावन किया । स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी आदि संतगण पधारे थे । अ.नि. पुरुषोत्तमदास हरिभाई पटेल तथा अ.नि. ईश्वरभाई मोतीभाई पटेल परिवार की तरफ से समग्र आयोजन किया गया । सभा संचालन शा.चैतन्य स्वामीने किया था । (कोठारीश्री मोटेरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण ११ वाँ पाटोत्सव पारायण तथा मुख्य द्वार अर्पण विधिका आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर महंतश्री) की प्रेरणा से सर्वोपरि श्रीहरि ने ३६ बार पधारकर इस भूमि को तीर्थ बना दिया । ऐसे करजीसण गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर का ११ वाँ पाटोत्सव तथा मंदिर के मुख्यद्वार अर्पण विधिके उपलक्ष में प.भ. पटेल जोईताराम त्रिभोवनदास तथा दिवालीबहन जोईताराम पटेल के संमान हेतु ता. २१-१२-१३ से २५-१२-१३ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा स.गु. शा.स्वा.

चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने कथामृत का पान करवाया।

ता. २५-१२-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। उनके वरद् हाथों से कथा की पूर्णाहुति के बाद मंदिर के मुख्य द्वार अर्पण विधिपूर्वक की गयी । ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारकर सभा में पधारे थे । समग्र गाँव को आशीर्वाद प्रदान किये।

समग्र प्रसंग के आयोजक तथा मार्गदर्शक स.गु.शा.स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री) तथा स.गु.शा.स्वा. माधवप्रियदासजी थे । इस प्रसंग में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा., विश्वप्रकाशदासजी (वडनगर), पुजारी पा. जसु भगत उपस्थित थे। यजमान हरिभक्तोंने सुंदर लाभ लिया।

(कोठारीश्री, करजीसण)

केम्परोड अहमदाबाद में श्रीमद् भागवत् सप्ताह पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (महंतश्री नारायणघाट) की प्रेरणा से अ.नि. सेंधाभाई जोईताराम पटेल तथा गं.स्व. जोईतीबाई के संकल्प से ता. २४-१२-१३ से ३०-१२-१३ तक श्रीमद् भागवत रात्रीय कथा पारायण स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद पर केम्प रोड शाहीबाग, अहमदाबाद में सम्पन्न हुई। इसके आयोजक सोमाभाई सेंधीदास पटेल, जीतेन्द्र सोमाभाई पटेल आदि परिवार थे । स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नाराटणघाट) के हाथों से कथा की पूर्णाहुति हुई। (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष में श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में वचनामृत कथा पारायण का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वा. देवप्रकासदासजी तता स.गु. महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट) की प्रेरणा मार्गदर्शन से प.भ. अमृतलाल हरगोविंददास कानदास पटेल तथा अ.सौ. शारदाबहन अमृतलाल पटेल तथा बहनश्री अल्पाबहन अमृतलाल के शुभ संकल्प से ता. ३१-१२-१३ से ता. ४-१-१४ तक संप्रदाय के सर्वोपरि ग्रंथ वचनामृत की पंचान्ह पारायण संप्रदाय के सुप्रसिद्ध वक्ता विद्वान कथाकार पू. स.गु.सा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पर हुई । यजमान परिवार तथा हरिभक्तोंने अलौकिक कथा पान करके वचनामृत को जीवन में उतारा। पूर्णाहुति प्रसंग में ता. ४-१-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। समस्त सभा और यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये थे । श्री अनिलकुमार अमृतलाल पटेल तथा अ.सौ. दिनाबहन अनीलकुमार पटेल (डांगरवा-वर्तमान यु.एस.ए.) परिवारने यजमान पद का लाभ लिया। इस प्रसंग पर अहमदाबाद के महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी पधारे थे।

(शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर में शाकोत्सव मनाया गया

श्रीहरि के चरणों से पावन नगरी वडनगर में श्री सहजानंद गुरुकुल में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा वडनगर मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से ता. ६-१२-१३ को शाकोत्सव का आयोजन किया गया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने पधारकर ठाकुरजी की आरती की और दर्शन करके श्री सहजानंद गुरुकुल में पधारे (शाकोत्सव के यजमान अ.नि. गज्जर रजनीकांत रणछोडलाल (पेथापुर) के चि. डॉ. परेशभाई गज्जर तथा दिलीपभाई गज्जर परिवारने तथा मोदी हरिभाई शामलदास चि. हर्षदकुमार, सुधिरकुमरा (जमाई) दिपककुमार तथा अश्विनकुमार (विसनगर) प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन आरती करके आशीर्वाद लिये। पुजारी स्वामी अभिषेकप्रसाददासजीने प.पू. आचार्य महाराजश्री द्वारा शाकोत्सव का वधार करवाया । सभा में कोठारी शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी तथा कोठारी शा. यज्ञप्रकाशदासजी (कांकरिया) ने शाकोत्सव का माहात्म्य कहा । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल वडनगर के युवानोने प.पू. महाराजश्री का स्वागत पूजन करके आशीर्वाद लिए। इस प्रसंग पर प.भ. सोमाभाई के मोदी (नगरपालिका प्रमुख) श्री सुनीलभाई महेता तथा श्री आई.एम. भावसार साहबने भी प.पू. आचार्य महाराजश्री का स्वागत किया था । अंत में सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये । श्री कालीदास जे. पटेल, श्री गुणवंतभाई भावसार, श्री बुधालाल पटेल, रवि सुधार, भूक्ति, जय, विपुल तथा कच्छी हरिभक्तों की सेवा प्रेरणारुप थी। (मोदी नविनचंद्र एम.)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (तलवड) ११ वाँ पाटोत्सव - पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण भगवान के चरणरज से पावन भूमि डांगरवा (तलपद) श्री स्वामिनारायण मंदिर के ११ वें पाटोत्सव के उपलक्ष में ता. ८-१२-१३ से ता. १२-१२-१३ तक संप्रदाय के विद्वान कथाकार संत पू.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) के वक्तापद पर श्री दंढाव्य देश लीला का सप्ताह पारायण किया गया । गाँव के

समग्र भक्तजनोने कथामृत का पान किया । इस प्रसंग के उपलक्ष में पोथीयात्रा, जलयात्रा, महाविष्णुयाग, जनबाई के मुंह में दही दूधकी लीला आदि का आयोजन किया गया । पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । सभा संचालन सिद्धपुर मंदरि के महंत शा.स्वा. चंद्रप्रकाशदासजीने किया था। (पटेल बलदेवभाई विसभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा में धनुर्मास में प्रातः ५-१५ से ७-१५ तक श्री नरनारायणदेव धून मंडल द्वारा प्रभातफेरी, धून, भोग आदि हरिभक्तों की तरफ से किया गया । प्रत्येक रविवार को एकादशी को आधा घंटे तक धून का आयोजन किया जाता है। उत्तरायण के दिन गाँव में हरिभक्तों द्वारा झोली फेरा किया जाता है। तमाम वस्तुए अहमदाबाद मंदिर में भेजी जाती है। (अरजणभाई मोरी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुर (कडी) शताब्दी महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुर (ता. कड़ी) का शताब्दी महोत्सव स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से मार्गदर्शन से ता. १७-१२-१३ से ता. १९-१२-१३ तक धूमधाम से मनाया गया । जिस में पोथीयात्रा, ठाकुरजी की नगरयात्रा के बाद स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी का १०० वाँ पाटोत्सव प्रसंग पर अभिषेक संतो द्वारा किया गया । प.पू. बड़े महाराजश्री इस प्रसंग पर (३३ वर्ष बाद) पधारे थे । संत-हरिभक्तोने भावपूर्ण स्वागत किया। प.पू. बड़े महाराजश्री द्वारा ठाकुरजी की अन्नकूट आरती की गयी । रामजी मंदिर में भी आरती की । अं तमें सभा को आशीर्वाद दिया ।

(धनवंत बी. पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जमियतपुरा का ४ था वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) तथा स.गु.शा.स्वा. छपैयाप्रसाददासजी की प्रेरमा से तथा प.भ. सुरेशभाई भलाभई मुखी परिवार के यजमान पद पर श्री स्वामिनारायण मंदिर जमीयतपुरा का ४ था पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । ता. १०-१२-१३ को सुबह प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। संत-हरिभक्तों ने इनका स्वागत किया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक करके यजमान के घर पधारे थे । उसके बाद अन्नकूट आरती कर सभा में पधारे थे । जहाँ हरिभक्तो द्वारा पूजन आरती तथा हारतोरा किया गया । संतो की प्रेरकवाणी के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया । समग्र आयोजन पा. हार्दिक भगतने किया । सभा संचालन शा.स्वा. छपैयाप्रसाददासजीने किया । (प ा . हार्दिक भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) में निःशुल्क रोग निदान सेवा का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा महंत स.गु. शा. लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से एप्रोच मंदिर में ता. ६-१२-१३ से जरुरतमंद गरीबो को निःशुल्क सेवा प्रदान की गयी ।

डायाबीटीस, बी.पी., बुखार, शर्दी, खांसी, टी.बी., कीडनी तथा पेटं के रोग तथा पीड़ा आदि गरीबो को मातृ मेडीकल सर्जीकल प्रसूतिगृह के डायरेक्टर डॉ. भरत डी. सुहागीया द्वारा रोज सुबह ८ से ९-३० डेठ घंटे तक निःशुल्क सेवा की गयी । तथा फ्री में उपलब्धदवा प्रदान की । जटील रोगो के हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया ।

गरीबो के जाँच की सुविधा योग्यरुप से प्रदान किये गये थे । इस हेतु से मंदिर के प्रांगण में ही एक आलग से रुम प्रदान करके ता. ६-१२-१३ को सुबह ८-०० बजे मंदिर के महंत स्वामी द्वारा दीप जलाकर तथा श्रीहरि की आरती करके मेडीकल सेवा का शुभारंभ किया गया ।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

साणंद नलसरोवर में सत्संग सभा का आयोजन

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ सानिध्य में तथा पू. स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से ता. १६-१२-१३ को श्री स्वामिनारायण मंदिर साणंद के हरिभक्तों के द्वारा साणंद से नल सरोवर सत्संग शिबिर (नौका विहार में) की गयी । जिस में जेतलपुर, कांकरिया, अहमदाबाद, मकनसर के संतगण पधारे थे । श्रीहरिकृष्ण महाराज को नलसरोवर के मध्य में प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों से अभिषेक करके हरिभक्तो को दर्शन करवाया । नौका विहार के बाद सुंदर सभा हुई । जिस में पू.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजीने सुंदर उपदेशात्मक बाते की । प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी भक्तों को आशीर्वाद दिये । ६०० जितने भक्तोने प्रसाद लिया ।

(जे.डी. ठक्कर)

मोटेरा में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा शिबिर

सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा अध्यक्षता में आगामी श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की एक दिवसीय शिबिर का

आयोजन कालुपुर मंदिर द्वारा ता. २९-१२-१३ को श्री नरनारायणदेव पार्टी प्लोट, मोटेरा में किया गया। अहमदाबाद के ७० गाँवो में से १६०० युवानोने भाग लिया। आगामी उत्सव के उद्घोष तथा उसके उपलक्ष में भजन-भक्ति तथा सेवा हेतु एवम् सत्संग में विकास के अवरोधकरुप विषयो का निराकरण हो इस हेतु से इस शिबिर का आयोजन किया गया था।

शिबिर के प्रारंभ में सभी युवानो ने कीर्तन भक्ति की। प.पू. आचार्य महाराजश्रीने संतमंडल के साथ पधारकर ठाकुरजी की आरती करके शिबिर का आरंभ किया। मोटेरा के युवक मंडल के प्रतिनिधिओने प.पू. आचार्य महाराजश्री का स्वागत पूजन आरती की। पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजीने श्री नरनारायणदेव की महिमा की सुंदर बात कही। उसके बाद पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी युवानो को श्री नरनारायणदेव महोत्सव की घोषणा करके विरोधप्रवृत्ति करने हेतु आज्ञा-आशीर्वाद दिये। प.पू. महाराजश्री के मंगल आशीर्वचन के बाद निष्ठावान तथा विद्वान सत्संगी प्रो. हितेन्द्रभाईने युवानो को सुदंर मार्गदर्शन दिया। शा.स्वा. हरिजीवनदासजी (हिंमतनगर) शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (एप्रोच), शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर) आदि संतोने विविधविषयों पर सुंदर प्रवचन-मार्गदर्शन दिये। सभी युवानो के प्रसाद की व्यवस्था की गयी। "वचनामृत तथा शिक्षापत्री के आधार पर सुखमय जीवन" पर श्री निलेशभाईने सुंदर मल्टी मीडीया द्वारा जानकारी दी। समापन सत्र के अंत में अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. स.गु.शा.स्वामी श्री हरिकृष्णदासजी तथा स.गु. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट)ने सुदंर प्रेरणा तथा आशीर्वाद दिये। समग्र कार्यक्रम का संचालन शा. रामकृष्णदासजीने किया।

एक दिन भी इस शिबिर में युवानो को आनंद प्रेरणा तथा नरनारायणदेव के लिए कुछ कर दिखाने का विश्वास प्राप्त हुए। ऐसा शिबिर आयोजन प्रत्येक विस्तार में हो ऐसी युवक मडंल की मांग पर पू. महाराजश्रीने प्रसन्न होकर भिन्न-भिन्न शिबिरों का आयोजन करने के आशीर्वाद दिये।

(अतुल पटेल, नारायणघाट)

बनासकांठा के दियोदर में भव्य शाकोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (कालुपुर मंदिर) की प्रेरणा से बनासकांठा के दियोदर गाँव में ता. १५-१२-१३ को भव्य शाकोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न हुई। श्री दिलीपभाई लवजीभाई ठक्कर, श्री शैलेषभाई तथा श्री नविनभाई उसके यजमान थे।

इस प्रसंग पर अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा. विश्वप्रकाशदासजी (वडनगर), स.गु. शा.पी.पी. स्वामी (नारणघाट), शा. राम स्वामी, स्वा. धर्मप्रवर्तकदासजी, शा. व्रजभूषण स्वामी, माधव स्वामी, निलकंठ स्वामी आदि संत गण पधारे थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने शाकोत्सव का अलौकिक वधार किया। सभा संचालन शा.स्वा. नारायणमुनिदासजीने किया।

(शा. मुनि स्वामी)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर में वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी का ८ वाँ पाटोत्सव ता. १३-११-१७ से ता. १९-११-१३ को धूमधाम से मनाया। इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगीजीवन सप्ताह पारायण स.गु.शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (मूली) तथा शा.स्वा. विश्वविहारीदासजी के वक्तापद पर हुई। इस प्रसंग पर श्रीहरियाग, अन्नकूट, महाभिषेक, श्री रामप्रतापजी का विवाह तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम किए गये। पाटोत्सव के यजमान प.भ. चंदाराणा रसिकलाल प्रागजीभाई थे। इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। ठाकुरजी की आरती करके समग्र सभा को आशीर्वाद दिये। प्रसंग में संतो तथा सांख्ययोगी बाईओ ने भाग लिया। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

हलवद में अखंड मंत्रजाप की पूर्णाहुति

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से हलवद (हरिकृष्ण फार्म) में ता. १५-१२-१३ से ता. ९-१२-१३ तक एक वर्ष से चल रही अखंड श्री स्वामिनारायण महामंत्र जप की समापन विधिता. ९-१२-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से सम्पन्न हुई। प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्चन में कहा है कि भजन करने से बल की वृद्धि होती है। सुदंर उदाहरणों के साथ आशीर्वाद प्रदान किये। जिस में हरिकृष्ण फार्मवाले प.. मुकेशभाई निलेशभाई तथा स्अखंड धुन के प्रेरक स्वामी जीष्णुचरणदासजी (मूली) का बहुमान करके शाल ओढ़ाई गई। कई स्थानो से संतो तथा गाँव के हरिभक्तों ने धर्मकुल के दर्शन का लाभ लिया।

(अनीलभाई बी. दुधरेजीया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जोडीया पुनः प्रतिष्ठा महोत्सव

सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण जोडीया में १४

बार पधारकर इस भूमि को अति पावन किया है । यहाँ का श्री स्वामिनारायण मंदिर २००१ के भूकंप में संपूर्ण ध्वंस हो गया था । उसके १३ वर्ष बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने मूली मंदिर के संत शा.स्वा. छपैयाप्रसाददासजी को नूतन मंदिर निर्माण हेतु आशीर्वाद सह आज्ञा की थी । जो मंदिर संपूर्ण होने पर ता. १६-११-१३ से ता. १८-११-१३ तक विविधप्रसंगो के साथ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया । ईस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् भागवत दशम स्कंधत्रिदिनात्मक कथा, संहिता पारायण, विष्णुयाग आदि किये गये । मूली के स.गु.शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी के वक्तापद पर सुंदर संगीतमय शैली में कथा हुई । इस प्रसंग में स.गु.शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर), शा.स्वा. घनश्याम स्वामी (माणसा), स.गु.शा. स्वा. जगतप्रकाशदासजी, स.गु. स्वा. श्यामचरणदासजी (जेतलपुर), शा. घनश्यामप्रकाशदासजी कोठारी, स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, राम स्वामी, जे.पी. स्वामी (मूली) आदि संतगण पधारे थे । ता. १७-११-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक पूजा-अर्जन करके प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव की आरती की गयी । उसके बाद कथा की पूर्णाहुति करके सभा में बिराजमान गु । यजमान परिवारो द्वारा पूजन-आरती भेट दिये गये । हालार के हरीभक्तों की सेवा से इस मंदिर का भव्य निर्माण हुआ है । शा.स्वा. छपैयाप्रसाददासजीने आभार विधिकी । यजमानश्री, दाताओं तथा छपैया स्वामी एवम् देव स्वामी का वहुमान किया गया । इस प्रसंग में सभा संचालन शा.स्वा. घनश्यामचरणदासजीने किया ।

(साधु छपैयाप्रसाददास)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद तथा प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया में नवेम्बर शनि-रवि की शाम को भव्य तुलसी विवाह का आयोजन किया गया । कीर्तन-धून के साथ बहनोने गरबा गाकर तुलशीमाता का विवाह धूमधाम से किया । यहाँ के महंत स्वामी ने तुलसी विवाह का सुंदर महिमा कहा । यजमान परिवार का बहुमान किया । खरमास पूर्ण होते ही नारायण स्वामीने ठाकुरजी को सुंदर साल तथा हरी सब्जी चढाई । (प्रवीण शाह)

(एलनटाउन-अमेरिका) जेतलपुरधाम में शाकोत्सव

श्री नरनारायणदेव श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर में (एलनटाउन) में २४ नवम्बर साम को ५ से ८ तक श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से भव्य शाकोत्सव मनाया गया । इस प्रसंग पर प्रत्येक चेप्टरों के महंत स्वामी तथा हरिभक्तगण पधारे थे । संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए कहा कि जेतलपुर में बिराजमान देवों के प्रताप से तमाम इच्छा संकल्प यहाँ दर्शन करने से पूर्ण होगे । पू. पी.पी. स्वामीने कहा कि एलन पठन में भव्य मंदिर निर्माण होना है तो आप सभी के सहयोग हेतु अनुरोधहै ।

अंत में ठाकुरजी को भोग-आरती के बाद सभीने प्रसाद ग्रहण किया । (प्रविण शाह)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

लसुन्द्रा : श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान प.भ. शांतिभाई खुशालभाई पटेल (प.भ. मुकेशबाई के पिताश्री) ता. २१-११-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

अहमदाबाद : देसाई कुंवरबहन परसोतमभाई (पीठवालाज) ता. १६-११-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासीनी हुई ।

गोविंदपुरा वेडा : प.भ. पिंकेशभाई के मातुश्री ता. २७-११-१३ को श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासीनी हुई ।

कोठा : प.भ. संतोकबाई कानदास पटेल ता. ६-११-१३ को श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासीनी हुई ।

कालीयाणा : प.भ. वशरामभई रवाभाई मोरी (उम्र ७८ वर्ष) ता. ३०-११-१३ को सारंगपुर गढडा दर्शन करके लौटते समय श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

डांगरवा (डाभी) : प.भ. सीताबहन ईश्वरलाल रामदास पटेल (निवृत कोठारी) (उम्र ७४ वर्ष) ता. २६-११-१३ को श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासीनी हुई ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर, धमासणा पाटोत्सव प्रसंग पर शाकोत्सव करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा विशाल सभा में हरि भक्त ।(२) मणीपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के शताब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री इसके साथ ही समूह आरती उतारते हुए हरिभक्त ।(३) डांगरवा (तलपद) मंदिर में कथा का श्रवण करते हुए हरिभक्त तथा जतनबा के प्रसादी के घर का दर्शन करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री ।(४) श्री स्वामिनारायण मंदिर जोडिया (मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा सभा में सत्संगीजन ।(५) श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण शोभायात्रा में दर्शन देते हुए तथा यजमान परिवार के साथ प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

પ.પૂ.ધ.ધૂ. આચાર્ય ૧૦૦૮
શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીકી આજ્ઞા સે

સ્થલ
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર
રાયગંજ, અયોધ્યા, જી. ફૈજાબાદ, ઉત્તરપ્રદેશ

Jagadish Offset
Praful Kharsani